ओ३म्

सत्यार्थ-सौरभ

अक्टूबर-२०१२

अक्टूबर-2012 ◆ वर्ष 1 ◆ अंक 5 ◆ उदयपुर

सौरभ बिखरा
दिग्दिगन्त में
नील गगन घन में

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १० १०

विजयादशमी

राम वाली भावना को
पहले तुम अपनाओ,
मर्यादा में रह कर
अपने सारे फर्ज निभाओ,
फिर जय बोलो राम की...

रावण का पुतला तो जलाया
जला न मन का रावण,
व्यर्थ है सब कुछ बना नहीं
जो जीवन निर्मल पावन,
तभी दशहरा है गर मन का
रावण मार गिराओ,
फिर जय बोलो राम की...

श्री राम ने दीन-हीन को
अपने कण्ठ लगाया,
जात-पाँत का भेद मिटा के
शबरी को अपनाया,
सबको अपने गले लगाओ
किसी को न ठुकराओ,
फिर जय बोलो राम की...

तृष्णाओं के स्वर्ण हिरन को
मार सको तो मारो,
लाभ है किस में, हानि किस में
सोचो और विचारो,
अपने इस मन के मंदिर में
भक्ति ज्योत जगाओ,
फिर जय बोलो राम की...

– जगत सिंह जगत

ऐतिहासिक सत्य

न रावण के दश सिर थे
और
न ही रावण-वध दशहरे को हुआ

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ - सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ-सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

संपादक

अशोक आर्य

कम्प्यूटर एवं ग्राफिक्स

संदीप यादव

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८ IFSC CODE- UBIN 0531014 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत् १९६०८५३११३
आश्विन कृष्ण सप्तमी
विक्रम संवत् २०६९
दयानन्दाब्द १८८

०१ ← रावण वध कब हुआ?

संसद बनाम न्यायपालिका

११ ← अवसर का निर्माण कीजिए

दुष्प्रवृत्तियों को कुचल डालो १२

October - 2012

०४	वेद सुधा
०७	भूली बिसरी क्रान्तिकारी
२१	माँ का कर्ज
२४	वेदों में चिकित्सा विज्ञान
२७	सच बराबर तप नही
२८	सूचना तकनीक के नवाचार ... २

समाचार २२

हलचल २३

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन ३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक — श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १ अंक - ५

मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४ , ९३१४५३५३७९, ९८२८९२६७४७
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यद् भद्रन्तन्नऽआ सुव।। यजु. अ. ३० मं. ३

हे प्रभु! आप कृपया हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिए और जो कल्याणकारी, गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं वे हमें प्राप्त कराइये।

वस्तुतः वेद के इस मंत्र में दो प्रार्थनाएँ की गई हैं। प्रथम प्रार्थना है कि हे प्रभु! हमारी सब बुराइयों को दूर कर दीजिए। दूसरी प्रार्थना है कि हमारे में अच्छाइयाँ भर दीजिए। श्रेष्ठ जीवन के निर्माण के लिए, यशस्वी बनने के लिए एवं प्रभु प्राप्ति के लिए प्रथम जीवन की बुराइयों को दूर करना होगा तभी उसमें अच्छाइयाँ स्थिर रह सकेंगी क्योंकि दुरितों का निष्कासन एवं भद्रताओं का निवसन ही राष्ट्र निर्माण की कुंजी है।

प्रस्तुत वेद मंत्र महर्षि दयानन्द जी का सर्वप्रिय मंत्र था। इसी कारण उन्होंने यजुर्वेद के प्रत्येक अध्याय का शुभारम्भ इसी मंत्र से किया और स्तुति, प्रार्थना एवं उपासना के मंत्रों में भी इसे ही सर्वप्रथम स्थान दिया। इस प्रकार की प्रार्थना सब प्रकार की साम्प्रदायिकताओं से मुक्त है। सभी दुरितों से बचना चाहते हैं और भद्र को ग्रहण करना चाहते हैं। जीवन से दुर्गुण दूर भगाने के लिए यजुर्वेद में प्रार्थना की गई है-

यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृण्णं बृहस्पतिर्मे तद्दधातु ।शं नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः। यजुर्वेद ३६.२

मेरे नेत्रों में, हृदय में अथवा मन में जो भी न्यूनता हैं वेद वाणी का पिता परमात्मा उसे पूरा करे और सम्पूर्ण भवनों का अधिपति परमात्मा ही सबका कल्याण करे। हमारी आँखें, जिह्वा, नाक, त्वचा आदि इन्द्रियों में पवित्रता आनी चाहिए। इनमें कोई दोष या छिद्र नहीं रहना चाहिए। यदि ये पवित्र हैं तो हम देवता हैं और यदि अपवित्र हैं तो हम राक्षस हैं। सबका सर्वदा कल्याण ही चाहें, किसी के धन-वैभव, रूप आदि पर कुदृष्टि न डालें। हमारी वाणी पवित्र हो और हमारी जीभ केवल अपने स्वाद के लिए ही हिंसा न करे।

दुर्गुणों के विषय में एक अत्यन्त रोचक घटना है। स्कूल की कक्षा में बैठे छात्रों को अध्यापक ने कहा- ''चुपचाप अपना पाठ याद करो और शोर मत करो।'' विद्यार्थियों ने अपना-अपना पाठ याद करना आरम्भ कर दिया। परन्तु कुछ देर के उपरांत एक विद्यार्थी अपनी सीट पर उठकर बोला-

'' अध्यापक महोदय जी! यह देखिए, सोहन बहुत देर से खिड़की के बाहर देख रहा है। वह अपना पाठ याद नहीं कर रहा है।''

अध्यापक महोदय ने देखा और मोहन को लक्ष्य बनाकर पूछा। मोहन! सोहन पुस्तक नहीं पढ़ रहा है यह बात तुम्हें कैसे मालूम हुई। क्या तुम्हारी नजर सोहन की ओर थी?यदि सोहन की ओर थी तो तुम अपनी पुस्तक नहीं पढ़ रहे थे। अध्यापक के प्रश्न का उत्तर मोहन को नहीं सूझा और वह शरमा गया।

वस्तुतः हम सब भी उस विद्यार्थी की भाँति दूसरों के दोषों को देखते रहते हैं। अपनी बुराइयाँ देखने का अवसर ही नहीं मिलता। यदि दूसरा व्यक्ति हमारी बुराइयों को बतलाए तो हमारा पारा चढ़ जाता है।

स्वामी श्रद्धानन्द विद्यार्थियों को उपदेश दिया करते थे कि स्वयं को सदा काम में लगाओ, बैठकर दूसरों की निंदा करने में मत लगे रहो, आप अपने भाई की आँखों का तिल देखते हो परन्तु अपनी आँखों का ताड़ नहीं देखते, अपनी ओर देखना आरंभ करो और दोषों को निकालकर सद्गुणों को अपनाओ।

महाभारत में एक घटना आती है कि एक बार द्रोणाचार्य ने युधिष्ठर और दुर्योधन को अपने पास बुलाया और आदेश दिया कि देश के विभिन्न स्थानों में जाकर इस बात का पता लगाकर आओ कि कौन आदमी अच्छा है और कौन बुरा है?दोनों इस कार्य-पूर्ति के लिए अनेकों स्थानों पर गये और उन्होंने अच्छे और बुरे आदमियों की खोज की और इसके पश्चात् दोनों गुरु द्रोणाचार्य के पास आ गये।

शेष पृष्ठ १३ पर

कहीं देश न जल जाए

भर्तृहरि जी ने ठीक ही लिख है कि मनुष्य की तृष्णा कभी जीर्ण नहीं होती। और वह तृष्णा अगर सत्ता की हो तो इतनी विकराल हो जाती है कि फिर व्यक्ति को समस्त दायित्व बोध, नैतिकता, सामजिक समरसता की भेंट चढ़ाने में एक क्षण की भी हिचकिचाहट नहीं होती। कहने को तो संविधान के अनुसार हमारे यहाँ विधि का शासन है। मान्य न्यायालयों के महत्वपूर्ण फैसले स्वतंत्र व ताकतवर न्यायपालिका की झलक भी यदा कदा दिखला देते हैं। परन्तु शासक वर्ग यह सोचने की बजाय कि उस फैसले से समाज को कितना लाभ मिलेगा,तुरन्त उस निर्णय की इस दृष्टिकोण से समीक्षा करने में जुट जाता है कि इस फैसले से उसके तथा उसके वोट बैंक पर क्या प्रभाव पड़ेगा। यदि यह प्रभाव विपरीत होगा तो तथाकथित 'विधि के शासन' की धज्जियाँ उड़ाने में उसे कोई शर्म महसूस नहीं होती। उदाहरण के तौर पर अत्यन्त चर्चित 'शाहबानो केस' तथा 'राजनारायण केस' की याद दिला दें। प्रथम केस में न्यायालय के समक्ष यह प्रश्न था कि एक मुस्लिम परित्यक्ता को उसके पति के द्वारा गुजारा भत्ता मिलना चाहिए या नहीं। मुस्लिम पर्सनल लॉ कानून में ऐसा प्रावधान नहीं है। मान्य सर्वोच्च न्यायालय ने गुजारा राशि के लिए शाहबानो के पक्ष में फैसला दिया जिसका मुस्लिम संस्थाओं द्वारा विरोध किया गया। विधि के समक्ष समानता की स्थापना करने वाला,प्राकृतिक न्याय को समर्पित यह एक क्रान्तिकारी निर्णय था। संविधान की भी यही भावना है कि कोई किसी भी जाति, धर्म, वंश, कुल का हो विधि के समक्ष समान है। परन्तु सत्ताधीशों को अपना वोट बैंक हिलता नजर आया। मुस्लिमों को प्रसन्न करने हेतु इस स्वस्थ व प्रगतिशील निर्णय को अप्रभावी करने हेतु मुस्लिम महिला विधेयक १९८६ लाया गया।

१९७१ में श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने रायबरेली से श्री राजनारायण के विरुद्ध चुनाव लड़ा। राजनारायण की हार हुई। इलाहबाद उच्च न्यायालय में श्री राजनारायण ने याचिका दायर की कि श्रीमती गाँधी ने चुनाव में अपने पद का पूर्ण उपयोग किया जो चुनाव संहिता का उल्लंघन था। इलाहबाद उच्च न्यायालय ने श्रीमती इन्दिरा गाँधी को दोषी पाया तथा उनका चुनाव निरस्त कर दिया। इसको अप्रभावी बनाने हेतु संविधान संशोधन कर प्रधानमंत्री पद को न्यायिक समीक्षा के घेरे से बाहर कर दिया गया।

इस समय 'प्रमोशन में आरक्षण' के प्रश्न को लेकर पूरा राष्ट्र उद्वेलित है। मान्य उच्च न्यायालय ने संविधान में समता व समान अवसर के आश्वासन को पुनःजीवित किया है पर कुर्सी के भूखे सत्ताधीशों को इस ऐतिहासिक निर्णय से अपने वोट बैंक की चिन्ता हो रही है अतः एक बार फिर न्यायपालिका के इस महान् निर्णय को संविधान संशोधन द्वारा अप्रभावी बनाने का कार्य शुरू कर दिया गया है।

यह ठीक है कि कुछ सहस्र वर्ष पूर्व भारत में गुण कर्म स्वभाव के आधार पर आधारित वर्ण व्यवस्था धीरे धीरे जन्मगत जाति प्रथा में परिवर्तित हो गई और यही नहीं तथाकथित उच्च जाति वाले ब्राह्मणादि द्वारा शेष नागरिकों का भयावह व अमानवीय शोषण किया गया। शिक्षा, प्रतिष्ठा, तरक्की के सारे रास्ते बंद कर दिए गए। यह रोंगटे खड़े कर देने वाला बर्बरतापूर्ण व्यवहार था। देश की स्वतंत्रता के साथ जब भारतीय संविधान में समता का अधिकार स्वीकार किया तो संविधान के निर्माताओं के समक्ष यह प्रश्न था कि सदियों से शोषित एवं अवसरों से वंचित, अशिक्षा तथा गरीबी में जी रहे मूलभूत सुविधाओं से महरूम उन वर्गों को समानता के स्तर पर कैसे ले जाया जाय। विचारोपरान्त यह व्यवस्था की गई कि ऐसे वर्ग को परिभाषित किया जाकर १० वर्ष तक उन्हें विशेष अधिकार दिए जायँ ताकि वे अन्य लोगों के समान स्तर पर आ सकें। यहाँ यह बात रेखांकित करने योग्य है कि संविधान निर्माता उसे संविधान प्रदत्त समता के अधिकार के विरुद्ध समझते थे। अतः प्रावधान केवल १० वर्ष के लिए किया गया। इसके पश्चात् अनुसूचित जातियाँ, अनुसूचित जनजातियाँ जैसे वर्ग अस्तित्व में आये।

यहाँ तक के प्रावधान को अन्यायपूर्ण कतई नहीं कहा जा सकता। सदियों से जिन पर अत्याचार हुए, उन्हें विशेष सुविधा देकर

बराबरी तक लाना उचित ही था।

शिक्षा में आरक्षण,नौकरियों में आरक्षण देकर जिस व्यवस्था को सीमित समय तक लागू किया गया, वहाँ सुविधाएँ देने के प्रतिफल में एक संगठित जन्मगत आधारित समूह को एक 'वोट बैंक' में परिणित कर दिया गया। और जहाँ वोट बैंक हो वहाँ कुर्सी के भूखे लोग ऐसे वोट बैंक को हाथ से जाने दें यह कदापि संभव नहीं था। अतएव सीमित व्यवस्था असीमित हो गई। और राजनीति के ठेकेदारों ने आरक्षण को चुनाव जीतने का हथियार बना लिया। उन्होंने इस बात पर ध्यान देना बन्द कर दिया कि क्यों संविधान निर्माताओं ने उसे सीमित समय के लिए ही लागू किया तथा इससे समता के मौलिक अधिकार का हनन होता है। यह योग्यता को प्राथमिकता के उपादेय प्राकृतिक सिद्धान्त के भी प्रतिकूल व्यवस्था है।

खैर! यह अतीव लम्बी चर्चा है अभी इस पर विशद् चर्चा का अवकाश नहीं है। यहाँ तक तो फिर भी समझ में आता है कि सदियों से शोषितों को प्रतिष्ठा व आर्थिक निर्भरता प्राप्त हो इस का उपाय भी समाज की ही जिम्मेदारी है। परन्तु अब जब यह मुद्दा चुनाव का लाभकारी हथियार बन गया है तो सारी हदें पार कर दी गई हैं। अब सर्वत्र आरक्षण ही आरक्षण है। आरक्षण का लाभ उठा जो समर्थ हो गया उसे अभी भी जातिगत आधार पर दलित बनाए रख प्रमोशन में भी आरक्षण का प्रावधान लागू है। देखते ही देखते सवर्ण अधिकारी तथाकथित दलित अधिकारी का मातहत बन गया। इससे आक्रोश उत्पन्न होना स्वाभाविक है। न्याय की अपेक्षा लेकर पुनः विधि के समक्ष समानता का भाव लेकर कोई कहाँ जावेगा?स्पष्टतः न्यायपालिका के पास।

सन् २००७ में उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा प्रमोशन में भी आरक्षण लागू किया गया,जिसे कि इलाहबाद उच्च न्यायालय में असंवैधानिक घोषित करने हेतु याचिका दायर की गई। ४ जनवरी २०११ को इलाहबाद उच्च न्यायालय ने इस नीति को असंवैधानिक घोषित कर दिया। जिसके खिलाफ माननीय उच्चतम न्यायालय में कई सिविल अपील दाखिल की गईं। न्यायमूर्ति दलवीर भंडारी तथा दीपक मिश्रा की पीठ ने संविधान पीठ के एम.नागराज तथा इन्द्रा साहनी के निर्णयों का उल्लेख करते हुए निर्णय दिया कि प्रमोशन में आरक्षण तभी दिया जा सकता है जबकि इसकी आवश्यकता को पर्याप्त आंकड़ों के आधार पर न्यायोचित सिद्ध किया जाए। इस प्रकार उत्तरप्रदेश सरकार की अपील खारिज कर दी गई। उस प्रत्येक मोड़ पर जब कि न्यायपालिका के निर्णय से सत्ताधारियों के वोट बैंक पर प्रतिकूल असर पड़ा तब तब संविधान में ही संशोधन कर ऐसे परिवर्तन लाए गए जिससे न्यायपालिका का निर्णय निष्प्रभावी हो जाय। पदोन्नति में आरक्षण के मामले में भी ऐसा ही हुआ।

उच्चतम न्यायलय ने पदोन्नति में आरक्षण को नकार दिया। इस रुकावट को दूर करने के लिए ७७ वाँ संविधान संशोधन लाया गया जिससे अनुच्छेद १६ अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजातियों के मामले में लागू नहीं होगा। यही नहीं ८५ वें संविधान संशोधन विधेयक द्वारा भूतलक्षी प्रभाव से संशोधन कर दिया गया जो एक नई मिसाल थी।

न्यायाधीशों के समय समय पर दिए निर्णयों को राजनीति में सत्ता प्राप्त करने हेतु सदैव उपेक्षित किया गया।

के.सी.वसन्तकुमार के मामले में माननीय उच्चतम न्यायालय ने सलाह दी थी कि :-

१. आरक्षण सन् २००० तक चलाया जाए।

२. पिछड़े वर्ग के लिए आरक्षण की कसौटी आर्थिक हो।

३. प्रत्येक ५ वर्ष में इस पर पुनर्विचार हो।

जाति आधारित आरक्षण ने ही जन्मगत जाति प्रथा को मजबूत किया है। इस तथ्य से भी इंकार नहीं किया जा सकता है कि तथाकथित सवर्ण जाति में पैदा होने वाले भी अनेक प्रकार से वंचित हैं। अतः आरक्षण के आधार रूप में आर्थिक स्थिति को मानना अपेक्षाकृत युक्ति संगत होता। दूसरे किसी भी परिवार में एक सदस्य को यदि आरक्षण की सुविधा मिल जाती है, वह सरकारी नौकरी में आ जाता है, फिर पदे पदे उसको व उसके परिवार को आरक्षण देना अन्य अनारक्षित वर्ग के साथ अन्याय है। यह अवसर की समानता के अधिकार से उसे च्युत करता है। वैसे भी जो सरकारी नौकरी प्राप्त कर चुका है वह अब वंचित कैसे हुआ?इतनी सीधी गणित समझकर भी राजनेता येन केन प्रकारेण आरक्षण को, यहाँ तक पदोन्नति में भी आरक्षण को जीवित रखे हुए हैं। इसके लिए सब कुछ करने को तैयार हैं। न्यायपालिका के पूर्व के फैसले को बार बार संविधान संशोधन करके रद्द कर दिया गया। अब एक बार फिर मान्य उच्चतम न्यायालय के उत्तरप्रदेश सरकार की एतद् विषयक अपील खारिज करने से उत्पन्न स्थिति को परिवर्तित करने हेतु संविधान संशोधन की जुगत की जा रही है जिससे आरक्षण विधिक रूप से चलता रहे और नेताओं के वोट बैंक सुरक्षित रहे। यह कैसा विधि का शासन है?

किसी ने ठीक ही लिखा है कि **' सियासत को लहू पीने की लत है वर्ना मुल्क में सब खैरियत है।'**

- अशोक आर्य
०९३१४२३५१०१
०९००१३३९८३६

❑❑❑

दुर्गा भाभी

प्रसिद्ध क्रांतिकारी भगवती चरण वोहरा की पत्नी दुर्गादेवी का जन्म **६ अक्तूबर,१९०७** को इलाहाबाद के न्यायाधीश की पुत्री के रूप में हुआ था। यह संयोग ही है कि दुर्गा देवी की मृत्यु **अक्तूबर माह की १४ तारीख को** ८१ वर्ष की उम्र में १९८८ को हुई। ग्यारह वर्ष की उम्र में दुर्गा देवी का विवाह पन्द्रह वर्षीय भगवतीचरण वोहरा से हुआ था। नेशनल कालेज-लाहौर के विद्यार्थी वोहरा क्रांतिभाव से भरे हुए थे ही, उनकी पत्नी दुर्गा देवी भी आस-पास के क्रांतिकारी वातावरण के कारण उसी में रम गईं थी। सुशीला दीदी को वे अपनी ननद मानती थीं। भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव की त्रिमूर्ति समेत सभी क्रांतिकारी उन्हें भाभी मानते थे।

साण्डर्स वध के पश्चात् सुखदेव दुर्गा भाभी के पास आये। सुखदेव ने दुर्गा भाभी से ५०० सौ रुपये की आर्थिक मदद ली तथा उनसे प्रश्न किया-आपको पार्टी के काम से एक आदमी के साथ जाना है, क्या आप जायेंगी ? प्रत्युत्तर हाँ में मिला। सुखदेव ने कहा-आपके साथ छोटा बच्चा शची होगा, गोली भी चल सकती है। दुर्गास्वरूप रूप धर दुर्गा भाभी ने कहा-'सुखदेव, मेरी परीक्षा मत लो। मैं केवल क्रांतिकारी की पत्नी ही नहीं हूँ, मैं खुद भी क्रांतिकारी हूँ। अब मेरे या मेरे बच्चे के प्राण क्रान्तिपथ पर जायें, मैं तैयार हूँ।' दूसरी रात ग्यारह बजे के बाद सुखदेव साण्डर्स का वध करने वाले भगत सिंह और राजगुरू, दुर्गा भाभी के घर आ गये। फिर प्रातः भगत सिंह ने शची को गोद में लिया, फैल्ट हैट और शची के कारण भगत सिंह का चेहरा छिपा था, पीछे दुर्गा भाभी बड़ी रूआब से ऊँची हील की सैण्डिल पहने, पर्स लटकाये तथा राजगुरू नौकर के रूप में पीछे-पीछे स्टेशन पहुँचे। भगत सिंह और दुर्गा भाभी प्रथम श्रेणी में तथा राजगुरू तृतीय श्रेणी के डिब्बे में चढ़ गये। गाडी के लखनऊ आने पर राजगुरू अलग होकर आगरा चल दिये। लखनऊ स्टेशन पर भगवती चरण वोहरा और सुशीला दीदी इनको लेने आये। **इस प्रकार भगत सिंह और राजगुरू को सकुशल लाहौर से निकालने का श्रेय दुर्गा भाभी को है। धन्य हैं ये वीरांगना।** इनके अतिरिक्त भेष बदल बदल कर बम-पिस्तौल क्रांतिकारियों को दुर्गा भाभी अक्सर मुहैया कराती रहती थीं।

असेम्बली बम काण्ड में गिरफ्तारी देकर भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त जेल गये। न्यायालय को इन लोगों ने क्रांतिकारियों की विचार-धारा के प्रचार का माध्यम बनाया। इन्हें छुड़ाने की योजना के तहत किये जा रहे बम परीक्षण के दौरान भगवती चरण वोहरा की मृत्यु हो गयी। **मृत्यु की सूचना का वज्रपात सहते हुए, अन्तिम दर्शन भी न कर पाने का दंश झेलते हुए भी धैर्य और साहस की प्रतिमूर्ति बनी रहीं दुर्गा भाभी।** पति की मृत्योपरान्त उनको श्रद्धांजलि रूपेण वे दोगुने वेग से क्रांति कार्य को प्रेरित करने लगी। पुनः कुछ दिनों बाद जहाँ वे रह रहीं थीं, बम विस्फोट हो गया। सभी लोगों ने तत्काल वहाँ से तितर-बितर होकर भागने की योजना बनाई। इस आपाधापी में दुर्गा भाभी और सुशीला दीदी एक साथ रहीं।

मुम्बई के गवर्नर हेली की हत्या की योजना दुर्गा भाभी ने पृथ्वी सिंह आजाद, सुखदेव राज, शिंदे और बापट को मिलाकर बनाई। गलत-फहमी में इन लोगों ने पुलिस चौकी के पास एक अंग्रेज अफसर पर गोलियाँ बरसा दीं। बापट की कुशलता पूर्वक की गई ड्राइविंग से यह लोग बच पाये। चन्द्रशेखर आजाद, दुर्गा भाभी को अब भाई की तरह सहारा देते थे, उन्होंने इस योजना को लेकर काफी डाँट लगाई। कुछ दिनों के बाद चन्द्रशेखर आजाद भी इलाहाबाद में शहीद हो गये।

समृद्ध परिवार की दुर्गा भाभी के तीनों घर लाहौर के तथा दोनों घर इलाहाबाद के जब्त हो चुके थे। पुलिस पीछे पड़ी थी। शची को दुर्गा भाभी अब अपने से दूर रख चुकी थीं। लाहौर आकर दुर्गा भाभी ने फ्री प्रेस ऑफ इण्डिया से कहा, 'पुलिस मेरा लगातार पीछा कर रही है, लेकिन कैद नही करती। मैं कोई काम नहीं कर पा रही हूँ। मुझे गिरफ्तार किया जाये नहीं तो मैं आज से अपने आप को स्वतन्त्र समझूँगी।' उसी दिन१४ सितम्बर,१९३२ को पुलिस ने बुखार में तपती दुर्गा भाभी को कैद कर लिया। १५ दिन के रिमाण्ड के पश्चात सबूतों के अभाव में दुर्गा भाभी को पुलिस को रिहा करना पड़ा। १९१९ रेग्यूलेशन ऐक्ट के तहत तत्काल आपको नजर कैद कर लिया गया। फिर लाहौर और दिल्ली प्रवेश पर पाबंदी लगा दी गई। तीन वर्ष बाद पाबंदी हटने पर आपने प्यारेलाल गर्ल्स स्कूल-गाजियाबाद में शिक्षिका के रूप में कार्य किया। इसी दौरान क्षय रोग हो गया परन्तु आप समाज-सेवा करते हुए कांग्रेस से जुडी रहीं। १९३७ में दिल्ली कांग्रेस समिति की अध्यक्षा चुनी गईं। १९३८ में हड़ताल में आप पुनःजेल गईं। बालक शची अब शचीन्द्र हो गया था, योग्य शिक्षा देने की चाह में दुर्गा भाभी ने अड्यार में माण्टेसरी का प्रशिक्षण लिया और १९४० में लखनऊ में पहला माण्टेसरी स्कूल खोला। सेवानिवृत्ति के पश्चात् आप गाजियाबाद में रहीं। आपका स्वर्गवास १४ अक्तूबर, १९८८ को हुआ। राष्ट्र के लिए समर्पित दुर्गा भाभी का सम्पूर्ण जीवन श्रद्धा- आदर्श-समर्पण के साथ-साथ क्रान्तिकारियों के उच्च आदर्शों और मानवता के लिए समर्पण को परिलक्षित करता है। **(संकलन)**

❑❑❑ प्रस्तुति- नारायण मित्तल, अश्विनी बाजार, उदयपुर

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थ प्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

मात्र ४०₹

सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) **अवश्य खरीदें।**

प्राप्ति स्थल : श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर - ३१३००१

- अधिकारी वर्ग से विशेष निवेदन-कृपया अपनी संस्था को 'सत्यार्थ-सौरभ' परिवार से अवश्य जोड़े।
- विद्वानों से निवेदन है कि वे केवल सत्यार्थ-सौरभ के लिये लिखे गये अपने संक्षिप्त, सारगर्भित लेख प्रेषित करने की कृपा करें।

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके,एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई हैः-
- सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) की द्वितीय आवृत्ति छपने में है। कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थ प्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया,उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास
भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री
डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

जिन सज्जनों को यह पत्रिका प्राप्त हुई है, वे तो अवश्य ही 'सत्यार्थ - सौरभ' परिवार से तुरन्त जुड़ने की कृपा करें।

श्री राम का वन से प्रत्यागमन

(१) राम के वनगमन का पता भरत को ननिहाल से अयोध्या लौटने पर चला। वह तुरन्त बन्धु बान्धवों सहित राम को अयोध्या लौटाने के लिए चित्रकूट जा पहुँचे। पर अनेक प्रकार से तर्क वितर्क और अनुरोध किए जाने पर भी राम अयोध्या लौटने को तैयार नहीं हुए। विवश होकर भरत को खड़ाऊँ लेकर ही सन्तोष करना पड़ा। परन्तु चलते समय भरत ने घोषणा कर दी-

चतुर्दशे हि सम्पूर्णे वर्षेऽहनि रघूत्तम। न द्रक्ष्यामि यदि त्वां तु प्रवेक्ष्यामि हुताशनम्।। अयोध्या ११२/२५-२६

अर्थात्- हे रघुकुलश्रेष्ठ! जिस दिन चौदह वर्ष पूरे होंगे, उस दिन यदि आपको अयोध्या में नहीं देखूँगा तो अग्नि में प्रवेश कर जाऊँगा, अर्थात् आत्मदाह द्वारा प्राण त्याग दूँगा। इस पर रामचन्द्र जी ने 'तथेति प्रतिज्ञाय' ऐसा ही होगा अर्थात् **१४ वर्ष की समाप्ति के दिन अयोध्या पहुँच जाऊँगा'** यह प्रतिज्ञा की।

राम के लिए प्रसिद्ध है-**'द्विःशरं नाभिसन्धत्ते रामो द्विर्नाभिभाषते'**-राम न दुबारा बाण चढ़ाते थे और न दुबारा बोलते थे। अर्थात्-एक ही बाण से शत्रु को यमलोक पहुँचा देते थे। इससे स्पष्ट है कि राम की १४ वर्ष की समाप्ति के दिन ही अयोध्या लौटने की प्रतिज्ञा में एक दिन का भी विपर्यास नहीं हुआ। यह भी जानते और मानते हैं कि जिस दिन रामचन्द्र जी का राज्याभिषेक होना था उसी दिन उन्हें १४ वर्ष के लिए वनवास की यात्रा करनी पड़ी इसलिए राम के राज्याभिषेक की तिथि का निश्चय होने पर उनके अयोध्या लौटने की तिथि का निश्चय हो जायेगा,क्योंकि उसी दिन १४ वर्ष पूरे होंगे। राज्याभिषेक के संदर्भ में वाल्मीकि रामायण के अनुसार महाराजा दशरथ के पूछने पर महर्षि वशिष्ठ ने कहा था-

चैत्रः श्रीमानयं मासः पुण्यः पुष्पितकाननः। यौवराज्याय रामस्य सर्वमेवोकल्प्यताम्।। अयोध्याकाण्ड ३/४

'पुष्पित हो गए हैं वन जिसमें, ऐसी शोभ-कान्ति से युक्त यह पवित्र चैत्र मास है, इसलिए राम के राज्याभिषेक के लिए सब प्रकार की तैयारी करो।' ज्योतिष शास्त्र की गणना के अनुसार पुष्य नक्षत्र चैत्र मास के शुक्ल पक्ष में आता है। **इस प्रकार राज्याभिषेक के चैत्र मास के शुक्ल पक्ष में होने का निश्चय हो जाने पर श्री राम का १४ वर्ष बाद चैत्र मास के शुक्ल पक्ष में अयोध्या लौटना स्वतः सिद्ध है।** मास का निश्चय हो जाने पर तिथि का निर्धारण करना शेष रहता है। इसका पता हमें युद्ध काण्ड में मिलता है। वहाँ लिखा है-

पूर्णे चतुर्दशे वर्षे पंचम्यां लक्ष्मणाग्रजः। भरद्वाजाश्रमं प्राप्य ववन्दे नियतो मुनिम्।। युद्ध काण्ड १२७/१

अर्थात् १४ वर्ष पूरे हो जाने पर लक्ष्मण के बड़े भाई (राम) पंचमी तिथि को भारद्वाज मुनि के आश्रम में पहुँचे और विधिपूर्वक मुनि को प्रणाम किया। प्रसन्नचित्त मुनिवर ने राम से कहा- **'अर्घ्यमद्यगृह्यणेदमयोध्यां श्वो गमिष्यसि'** (१२७/१७) आज आप यहाँ अर्घ्य ग्रहण करें और 'कल' अयोध्या जाएँ। तदनुसार राम तो उस दिन भारद्वाज आश्रम में ठहरे रहे, पर श्रीराम से आदेश पाकर हनुमान गरुड़ के वेग से चल कर अयोध्या जा पहुँचे और भरत से भेंट होने पर बोले- **'अविघ्नं पुष्ययोगेन श्वो रामं द्रष्टुमर्हसि'** (१२६/५३), कल राम को आप पुष्य नक्षत्र में यहाँ देखेंगे। हनुमान ने यह बात भरत से पंचमी के दिन कही,तब 'कल' से स्पष्टतः 'षष्ठी' अभिप्रेत है। इस प्रकार राम के राज्याभिषेक का और **१४ वर्ष बाद उनके अयोध्या प्रत्यागमन का चैत्र शुक्ला षष्ठी के दिन होना सर्वथा सिद्ध है।**

(२) सुग्रीव की सहायता से सीता की खोज के आरम्भ से लेकर रावण-वध तक के घटनाक्रम से भी यही निष्कर्ष निकलता है। बालि वध के पश्चात् अंगद के युवराज पद पर अभिषिक्त किए जाने के अवसर पर रामचन्द्र सुग्रीव से बोले-

अर्थात् - हे सौम्य! यह वर्षाकाल का चौमासा उपस्थित हो गया है। जिस चौमासे का वर्षा करने वाला यह पहला मास है। इसलिए यह किसी प्रकार के उद्योग का समय नहीं है। इसलिए इस समय तुम अपनी किष्किन्धापुरी में प्रवेश करो। (वर्षा ऋतु की समाप्ति पर) कार्त्तिक मास के आरम्भ में रावण के वध का प्रयत्न करना। यही हम लोगों का निश्चय है। हे सौम्य! अब तुम अपने घर में जाकर रहो।

तब तक मैं भी लक्ष्मण के साथ इस पर्वत पर रहूँगा। (द्रष्टव्यः किष्किन्धा काण्ड २६/१४,१५,१७)

वर्षा ऋतु के समाप्त होने पर जब राम ने देखा कि सीता की खोज के निमित्त सुग्रीव की ओर से कोई प्रयत्न नहीं हो रहा है। तो उन्होंने लक्ष्मण से कहा-एक दूसरे से बैर रखने वाले विजयाकांक्षी राजाओं के उद्योग का समय आ गया है। राजाओं के लिए यात्रा का समय आ गया है, किन्तु सुग्रीव ऐसा कोई उद्योग करता दिखाई नहीं पड़ रहा है। सीता की खोज के लिए उसने समय की अवधि दी है। अपना काम निकल जाने पर वह दुर्मति, अवधि बीत जाने पर भी ध्यान नहीं दे रहा है। किसी आशा को लेकर आए हुए तथा जिसने पहले उपकार किया हो, ऐसे उपकारी व्यक्ति को आश्वासन देकर जो आशा और प्रतिज्ञा को भंग करता है, वह संसार में अधम पुरुष कहाता है। अपना मनोरथ सिद्ध हो जाने पर जो मित्रों के मनोरथ को पूरा नहीं करता,मृत्यु के पश्चात् उस कृतघ्न पुरुष के मांस को मांसाहारी पशु-पक्षी भी नहीं खाते। सुग्रीव ने वर्षा के चतुर्मास के पश्चात् सीता की खोज का वचन दिया था। वे चार मास बीत गए हैं, किन्तु विषयभोग में लिप्त सुग्रीव इसे नहीं जान रहे हैं। सुग्रीव ने यह भी कह दो कि जिस रास्ते से मारा जाकर बाली गया है, वह रास्ता अभी बन्द नहीं हुआ है। अपने वचन का पालन करो, बाली के मार्ग के पथिक मत बनो। (किष्किन्धा काण्ड ३०/६०-८१)

श्रावण से कार्तिक तक चार मास होते हैं । इसका अर्थ यह है कि सुगीव ने राम की डाँट खाकर आश्विन के अन्त में अपने सहायकों या कर्मचारियों को सीता की खोज में प्रवृत्त किया। इसकी पुष्टि आगे चलकर ५३ वें सर्ग में आए एक अन्य श्लोक से भी होती है। वहाँ कहा है-

वयमाश्वयुजे मासि कालसंख्याव्यवस्थिताः। प्रस्थिताऽसोपि चातीतः किमतः कार्यमुत्तरम्।। कि. ५३/६

अर्थात् हम लोग तो सीता के अन्वेषण की प्रतिज्ञा करके आश्विन मास में निकले थे। वह समय तो बीत गया, तब आगे हम क्या करें।

वर्षा के चार मास तो श्रावण से कार्तिक तक बनते हैं, किन्तु वास्तव में वर्षा का अन्त आश्विन में हो जाता है। उस समय का वर्णन करते हुए

गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है-

फूले कास सकल महि छाई। जनु वर्षाकृत प्रगट बुढ़ाई।।

सारी पृथिवी पर काँस फूल कर छा गये। ऐसा प्रतीत होता है,मानो वर्षा का बुढ़ापा आ गया है। वर्षा का बुढ़ापा देख राजा लोग निश्चिन्त होकर विजय यात्राओं के लिए निकल पड़ते थे। **आश्विन मास में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाने वाला दशहरा का पर्व उसी का प्रतीक है।**

सीता की खोज के अभियान पर जाने वालों को सुग्रीव ने कह दिया था-

ऊर्ध्वं मासान्न वस्तव्यं वसन् वध्यो भवेन्मम। सिद्धार्थाः संनिवर्तध्वमधिगम्य च मैथिलीम्।। कि. ४०/७०

यश्च मासान्निवृत्तोग्रे दृष्टा सीतेति वक्ष्यति। मत्तुल्य विभवो भोगैः सुखं च विहरिष्यति।। कि.४१/४७

अर्थात् एक मास से अधिक तुम लोग वहाँ न ठहरना । इस आदेश का उल्लंघन करने वाले प्राणदण्ड के भागी होंगे। जानकी का पता लगाकर और सुफल मनोरथ होकर लौटो। जो कोई व्यक्ति एक मास के भीतर लौटकर 'मैने सीता को देखा है' सबसे पहले कहेगा, वह मेरे समान वैभव का अधिकारी होगा और सुखपूर्वक विहार करेगा। सीता को खोजने गए लोग स्वयं भटक गए और एक गुफा में जा फँसे। जब वे किसी प्रकार उसमें से निकलने में सफल हुए तब तक वसन्त ऋतु का आगमन हो चुका था और सुग्रीव द्वारा निर्धारित अवधि बीत चुकी थी-

ते वसन्तमनुप्राप्तं प्रतिवेद्य परस्परम्। नष्टसन्देशकालार्था निपेतुर्धरणीतले।। ५३/५

इसलिए निर्दिष्ट कार्य को समय पर न कर पाने के कारण भयभीत होकर (किष्किन्धा लौटने पर मृत्युदण्ड अपरिहार्य था) धरती पर लौटने लगे।

वसन्त ऋतु- आगमन तक भी सीता-सन्धान नहीं हुआ था।

उधर लंका में सीता को आतंकित करते हुए रावण ने कहा- हे मिथिला की राजकुमारी जानकी ! मेरी इस बात को सुनो। हे भामिनी! मैं तुम्हें बारह मास का समय देता हूँ। हे सीते! यदि इस अवधि के भीतर तुमने मुझे स्वीकार नहीं किया तो मेरे पाचक मेरे प्रातराश के लिए तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे। अरण्यकाण्ड ५६/२४-२५

बारह मास की अवधि पूरी होने में जब दो मास रह गए तो वह एक बार फिर रावण ने सीता से भेंट की और चेतावनी दी-

'दो मास बीतने पर यदि तुम मुझे पतिरूप में स्वीकार नहीं करोगी तो मेरे पाचक मेरे प्रातराश के लिए तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे। सुन्दरकाण्ड २२/८

तब सीता आत्मघात का निर्णय करके विलाप करने लगी। ऐसी स्थिति में वहाँ हनुमान का प्रदुर्भाव हुआ। परस्पर वार्तालाप के अन्त में सीता ने हनुमान को बताया- मेरा यह सन्देश रामचन्द्र जी से कह देना कि मेरे उद्धार के लिए शीघ्र प्रयत्न करें, जब तक इस वर्ष की अवधि की समाप्ति नहीं होती, क्योंकि इस वर्ष का अन्त ही मेरे जीवन की अवधि है। वर्ष की अवधि का दसवाँ मास बीत रहा है। केवल दो मास शेष रहे। सुन्दरकाण्ड ३७/७-८

परिणामतः राम ने तत्काल सुग्रीव को बुला भेजा और आदेश के स्वर में कहा-

'अस्मिन् मुहूर्त्ते सुग्रीव प्रयाणमभिरोचते' (युद्ध० ४/३) - मुझे इसी समय चढ़ाई करना उचित प्रतीत होता है। यह भी कहा कि-

सीता श्रुत्वाभियानं मे आशामेष्यति जीविते। जीवितान्तेमृतं स्पृष्ट्वा पीत्वामृतमिवातुरः।। युद्ध ४/५

मेरी चढ़ाई का समाचार सुनकर जीवन के प्रति उसी प्रकार आशान्वित होगी जिस प्रकार रोगी मरणकाल में अमृत का स्पर्श और पान करके आशान्वित होता है। पुनः बोले-

उत्तराफाल्गुनी ह्यद्यश्वस्तु हस्तेन योक्ष्यते। अभिप्रयाम सुग्रीव सर्वानीकसमावृताः।। युद्ध ४/६

आज उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र है, कल हस्त नक्षत्र से इसका योग होगा। हे सुग्रीव! इस समय पूरी सेना लेकर चढ़ाई कर दो। **इस प्रकार फाल्गुन मास में राम ने पूरे दल बल के साथ लंका की ओर प्रयाण किया।** युद्ध होने लगा। तब एक दिन रावण के सुपार्श्व नामक मंत्री ने रावण को परामर्श दिया।

अभ्युत्थानं त्वमद्यैव कृष्णपक्षचतुर्दशीम्। कृत्वा निर्याह्यमावस्यां विजयाय बलैर्वृतः।। युद्ध ६३/१५

तुम आज कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को उद्योग आरम्भ करके कल अमावस्या को सेना से युक्त होकर विजय के लिए निकलो। इस प्रकार चैत्र मास की अमावस्या को रावण मारा गया था। स्कन्ध तथा पद्म पुराणों में राम रावण युद्ध के तिथिवार दिए गए ब्यौरे के अनुसार भी ही तिथि ठहरती है। रावण की अन्त्येष्टि, विभीषण का राज्याभिषेक आदि कार्यों से निवृत्त होकर **राम चैत्र शुक्ला पंचमी को भारद्वाज आश्रम और षष्ठी को अयोध्या-नन्दिग्राम में पहुँच गए थे।**

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि विजयादशमी अथवा दशहरा का रावण वध या लंका विजय से कोई संबंध नहीं है। फिर मिथ्या कल्पना की उद्भावना किस प्रकार हुई? ऐसा अनुमान होता है कि विजयादशमी मुख्यतः क्षत्रियों का पर्व होने से उस अवसर पर विभिन्न रूपों में शौर्य प्रदर्शन होता था। उसी प्रसंग में उसे नाटक का रूप देकर विजयादशमी से दस दिन पूर्व रामलीला का आरम्भ होकर उसकी समाप्ति विजयादशमी के दिन की जाती थी और उसी दिन अन्तिम दृश्य के रूप में रावण का वध दिखाया जाता था। उसी से कालान्तर में यह धारणा बद्धमूल हो गई कि वस्तुतः आज ही के दिन रामचन्द्र जी द्वारा रावण का वध होकर लंका पर विजय प्राप्त हुई थी।

इसी क्रम में यह भी कल्पित कथा चल पड़ी कि इस दिन रामचन्द्र जी वनवास से लौटकर अयोध्या लौटे थे और उनकी प्रजा ने हर्षोल्लास की अभिव्यक्ति के रूप में दीपावली की थी। परन्तु जब लंका विजय के रूप में विजयादशमी का विचार भी कपोलकल्पित है तो कार्तिक मास में उनके प्रत्यागमन के उपलक्ष्य में दीवाली मनाये जाने का प्रश्न ही नहीं उठता।

- स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

गरीबी में पैदा हुआ, अभावों में पला, प्रत्येक व्यक्ति से उपेक्षित, मित्रों से रहित एक मनुष्य था। उसे शिक्षा प्राप्त करने का कोई अवसर नहीं मिल सका था। उसकी उन्नति के मार्ग में बाधाएँ ही बाधाएँ थीं, परन्तु उसका निश्चय दृढ़ था, संकल्प अटूट था और उसने संसार को दिखला दिया कि दृढ़निश्चयी आत्मा में कितना बल होता है, उसने सिद्ध कर दिया कि कार्य की सफलता महान् पुरुषों के अन्तःकरण में होती है, उपकरणों में नहीं।

ग्राहम बैल

वह व्यक्ति था जॉन ए जॉनसन, जिसने मिनेसोटा का गवर्नर बनने के बाद कहा था, 'मैं जिस कस्बे में पैदा हुआ था, उसी में मैंने सर्वोत्तम उन्नति करने का निश्चय किया था, अपनी दशा बदलने का और लोगों की दशा सुधारने का और उसी दृढ़ निश्चय के बल पर मुझे अपने उद्देश्य में सफलता मिली।''

कुछ लोग बने ही ऐसी मिट्टी के होते हैं कि वे हारना नहीं जानते। वे बहाने नहीं बनाया करते। वे काम करते हैं। वे ऊँघते नहीं, उबासियाँ नहीं लिया करते, वे आगे ही आगे बढ़ते जाते हैं। वे किसी की सहायता की प्रतीक्षा नहीं किया करते हैं, वे किसी अवसर की प्रतीक्षा नहीं किया करते, अवसर का निर्माण किया करते हैं।

जिन्होंने महान् कार्य कर दिखलाए, वे भाग्यशाली घरों में पैदा नहीं हुए थे, बल्कि निर्धन घरों में हुए थे, जिनके पास कोई आवास न था। फुल्टन, माइकेल, फाराडे, व्हिटने, हार्वे, बैल आदि इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

मानव जाति के वास्तविक इतिहास में इससे अधिक रोमांचक कथा दूसरी नहीं है कि कठिनाइयों में किस प्रकार मनुष्य ने अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त की।

जिन मनुष्यों में इतना आत्मविश्वास नहीं कि वे कार्य को पूरा कर सकते हैं, वे सचमुच इस कार्य को कभी पूरा नहीं करेंगे। पहले

अवसर निर्माण कीजिए

- प्रो. आई. जे. भाटिया

अपने मन के शब्दकोश से नहीं शब्द को हटाएँ, तभी उनसे वह कार्य संभव होगा। अपने शब्दकोश से सन्देह का शब्द हटाएँ तभी उसका स्थान निश्चय लेगा और तभी परिणाम होगा-पूर्ण सफलता।

जो असफल हो जाते हैं, उनके पास यही बहाना है- हमें चांस ही नही मिला। ''असफल लोगों की फौज से आप भेंटवार्ता करके देखें, उनमें से अधिकांश का यही उत्तर होगा कि उन्हें दूसरों की तरह कोई अवसर ही नहीं मिला, कि उनकी सहायता करने वाला कोई न था, कि उनका उत्साह ही किसी ने नहीं बढ़ाया। वे असफल व्यक्ति आपको बतलाएँगे कि अच्छे-अच्छे पदों में से सभी पर नियुक्तियाँ की जा चुकी हैं, कि प्रत्येक व्यवसाय और धन्धे में लोगों का जमघट लगा हुआ है कि उनके लिए पाँव टिकाने की भी कहीं जगह नहीं है, कि उनके लिए किसी क्षेत्र में कोई चांस नहीं है, कि सभी अवसर उनके हाथ में आने से पहले अन्य व्यक्तियों के कब्जे में आ चुके हैं। जब आप कहते हैं, ''मेरे लिए कोई अवसर नहीं।'' या ''मैं अमुक काम नहीं कर सकता।'' तब आप भी एक तरह से सहस्रों उन युवक-युवतियों की तोता-रटन्त को दोहराते हैं जो कहते हैं, ''यह असम्भव है, मैं इस काम को करने में असमर्थ हूँ।'' इन सभी शब्दों को अपने शब्दकोश में से निकाल फेंकिए। जब आप महान् कार्यों की बात सोच रहे हैं और सोच रहे हैं कि काश आपको कॉलेज की शिक्षा मिल सकती, व्यापार शुरु करने के लिए आपके पास पूँजी होती, तब आप उनके उदाहरण अपने सामने क्यों नहीं रखते जिनके पास आपसे भी कम अवसर थे और फिर भी उन्होंने पथ की बाधाओं को ठोकर मारकर अपना मार्ग बनाया और निरन्तर उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होते चले गए। उनके पास न मित्र थे, न धन था, न प्रभाव था, न कोई सहायक, लेकिन इसके बावजूद उन्होंने आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता का सहारा लिया, पथ-बाधाओं को उठाकर दूर फेंक दिया-शारीरिक दुर्बलता या अंगहीनता की परवाह न की और भाग्य के भरोसे बैठना कभी उचित नहीं समझा और इसलिए हर प्रकार के बाधक वातावरण में भी वे अपने व्यक्तित्व का सर्वोत्तम विकास करने में सफल हुए।

किसी ने सच कहा है कि ईश्वर जब किसी मनुष्य को शिक्षा देना चाहता है तो वह उसे सम्पत्ति के विद्यालय में न भेजकर विपत्ति के विद्यालय में भेजता है, उसे आवश्यकताओं और अभावों के विद्यालय में भेजता है। कई बार गरीबी के कारण मनुष्य के वे छिपे हुए गुण प्रकाश में आते हैं, जिनकी कभी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। असाधारण अवसर नहीं, सुख-आराम नहीं, सुविधा और प्रोत्साहन नहीं, पूँजी और ऐश्वर्य नहीं, निर्धनता ही मानव जाति का महान् विश्वविद्यालय रहा है इस विश्वविद्यालय से निकले स्नातकों की बहुसंख्या ही महान् राजनीतिज्ञों, भाषणकर्त्ताओं, उदारचरित्रों, परोपकारियों, विद्वानों, साहित्यकारों, संगीतज्ञों तथा चित्रकारों का पद सँभालती रही है।

इस संबंध में लिंकन का उदाहरण अभूतपूर्व है। उसने गरीबी में जन्म लिया। गुंडागर्दी में फँसा, व्यवसाय प्रारम्भ करने पर दिवालिया हो गया और राजनीति के उतार-चढ़ाव के बावजूद वह अमेरिका के उच्चतम पद तक पहुँचा। लिंकन को इस स्थान तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण स्थान उसकी इच्छा शक्ति का था। जब उसके दोस्तों ने विधानमंडल के लिए उसे उम्मीदवार चुना तो उसके दुश्मनों ने उसकी खिल्ली उड़ाई थी। चुनाव के लिए जब वह भाषण दिया करता था तो उसके कपड़े बेढंगे और उसके साइज के भी नहीं होते थे। इससे स्पष्ट है कि उसके पास चरित्र और मित्रों के सिवा और ऐसी कोई चीज नहीं थी जिसके सहारे वह आगे बढ़ पाता। जब उसके मित्रों ने उसे वकालत करने के लिए सुझाव दिया तो वह उनकी इस बात पर हँसा। उपहास में उसने कहा कि मेरे पास तो दिमाग है ही नहीं। परन्तु उसके पड़ोसियों का कहना है कि उसने नंगे पाँव रहकर और पेड़ों के नीचे बैठकर वकालत की। वह जिस दुकान पर सो जाता था। विधानमंडल में जाने के लिए वह कपड़े उधार लेकर आया करता था ताकि सभ्य प्रतीत हो।

अब्राहम लिंकन

ऐसे अन्य अनेक व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने पैरो में जूतों की बजाय चिथड़े बाँधकर बर्फानी रास्तों को पार किया है। केवल किताब पाने के लिए एक व्यक्ति केवल पानी के एक गिलास और रोटी के एक टुकड़े पर रहकर अपने आपको विद्वान् बना सका। एक व्यक्ति को पुआल पर सोकर अपने जीवन का बहुत-सा अंश गुजारना पड़ा। रात को भोजन प्राप्त करने के लिए सैमुअल नामक एक व्यक्ति ने लोगों के बर्तन साफ किए। इतिहास ऐसे अनेक उदाहरणों से भरा पड़ा है। जो व्यक्ति जीवन में सफल होने के लिए कोई मूल्य अदा करता है, उसकी पराजय कभी नहीं होती, वह सदा विजयी रहता है। पेरिस में उन दिनों अंधेर मचा हुआ था। अधिकारी गुंडागर्दी को रोकने में असमर्थ थे। उस समय एक व्यक्ति ने कहा कि मैं एक ऐसे युवक अधिकारी को जानता हूँ जो इस भीड़ को नियंत्रण में ला सकता है। लोग चिल्लाए- ''उस व्यक्ति को जल्दी बुलाओ।'' नेपोलियन को बुलाया गया। उसने केवल भीड़ को ही नियंत्रित नही किया बल्कि उस समय के अधिकारियों को भी नियंत्रण में लेकर फ्रांस का सम्राट बन बैठा। यूरोप को भी अपने अधीन कर लिया। आस्ट्रिया के सम्राट जोज़ेफ द्वितीय की समाधि पर लिखा है, ''यहाँ एक ऐसा सम्राट सोया पड़ा है जिसकी महत्वाकांक्षाएँ तो बहुत थीं परन्तु उसने किसी भी एक योजना को सिरे नहीं चढ़ाया।'' **यदि एक शक्ति को एक दिशा में लगाया जाए तो उसका फल अनेक शक्तियों को विभिन्न दिशाओं में लगाये जाने की अपेक्षा अधिक लाभप्रद होगा।**

इस संसार में जितने भी महान् व्यक्ति हुए हैं उनकी एक विशेषता यही थी कि वे अपनी सारी शक्तियाँ अपने ध्येय के अतिरिक्त अन्य किसी बात के संबंध में सोचते भी नहीं थे।

महर्षि दयानन्द का ओषधि पत्र

१. **उपदंश की ओषधि-** आँवले दूध वा शहद के साथ १) तोले भर खावै तो उपदंश जाय।

२. **जीर्ण ज्वर की ओषधि-** खूबकला १) तोले भर रात को पानी में भिगो दें। प्रातःकाल मिश्री के साथ शरवत बना कर पीवै और घी न खाय और घी की जगह बादाम का रोगन खावै तो २१ दिन में जीर्ण ज्वर जाय, परन्तु बासा पानी में नहाता रहै।

३. **पुष्टिकर ओषध-** ऽ१ सेर भर प्याज के छिलके उतार छोटे-छोटे टुकड़े कर कोरे बर्तन में शहद के साथ भिगोदे फिर १५ दिन तक भूमि में गाड़ दे, निकाल कर पश्चात् तोले १) भर नित्य खावै तो पुष्टि को प्राप्त हो जाय।

४. **जमींकन्द के बनाने की रीति-** सेर भर जमींकन्द को शुद्ध करके ऽ=आध पाव अदरख के साथ उबाल मसाले डाल शाक बना ले।

५. **पेट के शूल की ओषधि-** एक एक १) तोले भर प्याज का रस अदरख का रस और शहद इन तीनों को मिला कर दिन में तीन समय पीवै तो शूल रोग जाय।

गुरु द्रोणाचार्य ने सबसे पहले युधिष्ठर से पूछा ? युधिष्ठर ने उत्तर दिया कि मेरे अतिरिक्त सारे आदमी अच्छे हैं और मैं ही सबसे बुरा आदमी हूँ। इसके बाद उन्होंने दुर्योधन से पूछा और उसने उत्तर दिया कि मेरे अतिरिक्त सारे आदमी बुरे हैं और मैं सबसे अच्छा आदमी हूँ।

कहने का भाव यह है कि युधिष्ठिर ने अपने दोष और दूसरों के गुण देखे। परन्तु इसके विपरीत दुर्योधन ने अपने गुण देखे और दूसरों के दोष देखे। अतः हमे भी अपने दोष और दूसरों के गुण देखने चाहिए फिर शायद ही हमें कोई बुरा आदमी नजर आये।

बड़े-बड़े महापुरुषों ने भी अपने दोष और दूसरों के गुणों को देखा है। हम देखते हैं कि दोष किसमें नहीं होता। वस्तुतः यह सारा संसार दोष और गुणों से भरा पड़ा है। जैसे सूर्य में तपस है, चन्द्रमा में कालिमा है और सागर में खारा पानी है जैसे Essay on man में लिखा हैः-

Virtuous and vicious everyman must be. Few in the extreme but all in degree.

नेकी एवं बदी हर व्यक्ति में होती है कुछ में बहुत अधिक होती है परन्तु कुछ में कम। केवल मात्रा का अन्तर होता है। कोई भी व्यक्ति पूर्ण नहीं है। अतः यदि कोई व्यक्ति दोष रहित मित्र को अपना मित्र बनाना चाहे तो उसे मित्र विहीन रहना पड़ेगा।

इसके विषय में एक शिक्षाप्रद कहानी इस प्रकार प्रस्तुत की जाती है। एक राजा था। अपने राज्य में उसने नियम बना रखा था कि जो कोई चोरी करेगा, उसे फाँसी की सजा मिलेगी। एक दिन राजमहल में चोरी हो गई। छानबीन हुई। तीन व्यक्ति पकड़े गये। अपराध साबित हो गया और तीनों व्यक्तियों को फाँसी की सजा दी गई। राजा के व्यक्ति उन्हें फाँसी देने ले गये। दो व्यक्तियों को उन्होंने फाँसी दे दी। तीसरे को देने लगे तो उसने कहा- ठहरो। फाँसी तो तुम दोगे ही परन्तु मुझे एक रहस्य ज्ञात है। यह किसी को बता देना चाहता हूँ जिससे संसार का कल्याण हो जायेगा।

लोगों ने पूछा- ''क्या रहस्य है।''
उसने कहा- '' मैं लोहे से सोना बनाना जानता हूँ?''
राजा के व्यक्तियों ने कहा- ''अच्छी बात है बतला, लोहे से सोना किस प्रकार बनता है?''
चोर ने कहा- ''तुम्हें नहीं, केवल राजा को बता सकता हूँ।''
यह बात राजा के कान में पहुँची। उसके मुख में भी पानी भर आया।
चोर को बुलाकर उससे पूछा- क्यों भाई?क्या यह बात सच है कि तू लोहे को सोना बना देता है।
उस चोर ने कहा- ''हाँ महाराज मैं बूटी जानता हूँ। उसे लोहे पर डाल देने से सोना बन जायेगा।
राजा ने पूछा- ''कितने लोहे का सोना बना सकता है तू?''
उसने उत्तर दिया- ''जितना भी आप चाहें परन्तु बूटी मिलती है जंगल में। आप मेरे साथ दो आदमी भेज दीजिए। मैं बूटी लेकर आता हूँ। आप लोहा एकत्रित कराइये। राज्य भर के लोगों से भी एकत्रित कराइये। मैं सबके समक्ष सोना बनाकर दिखाऊँगा।''

बस फिर क्या था। वह सिपाहियों के साथ वन में चला गया। यहाँ राजा के महल के बाहर राज्य का लोहा इकट्ठा होने लगा। जिसके पास जो वस्तु लोहे की थी। वह उसको ही उठा लाया। कई-कई मन के बाट, तराजू, लोहे की छड़ियाँ, लोहे के शहतीर,

चिमटे, खम्बे, बर्तन, बाल्टियाँ, ढ़ोल सब इकट्ठे हो गये। कई लोगों को दूसरी वस्तुएँ नहीं मिलीं, तो वे ताले, चाबियाँ, कील, सलाइयाँ ही उठा लाये। सब लोग एकत्रित हो गये। किसान भी आ गये, दुकानदार भी, ठेकेदार भी, मंत्री और राज्य-कर्मचारी, सब इकट्ठे हो गये।

तभी वह व्यक्ति जंगल से बूटी लेकर आया। हाथ में मलकर बूटी उसने एक मेज पर रख दी और बोलाः-

''महाराज यह है बूटी! उसको लोहे के एक ढ़ेर पर डाल देने से सोना बन जायेगा। परन्तु शर्त यह है कि बूटी को उठाकर वही व्यक्ति लोहे पर डाले, जिसने कभी जीवन में चोरी न की हो। मुझे तो चोरी के कारण फाँसी का दंड मिला है। मैं तो यह कर नहीं सकता। बड़े-बड़े मंत्री, पदाधिकारी, राज्य कर्मचारी और अन्य लोग विद्यमान हैं। उसमें से ऐसे मिल जायेंगे, जो इस बूटी को लोहे पर डाल सकें। उन्हें कहें कि बूटी को उठायें और लोहे पर डाल दें।''

राजा ने कहा- ''हाँ, ऐसा तो हो सकता है।''

क्यों, भाई किसानो और भू-स्वामियों। तुम में से ऐसा कौन है, जिसने जीवन में कभी चोरी न की हो?

किसान थोड़ी देर चुप रहे। तब उनके चौधरी ने उठकर कहा- ''महाराज आप तो जानते हैं हम लोग अपने पशुओं को खिलाने के लिए एक-दूसरे के खेत में चारा काट लेते हैं फिर यह चोरी तो हो गई। हममें ऐसा व्यक्ति कहाँ मिलेगा?''

राजा दुकानदारों की ओर देखकर बोला- ''भाई! तुम में से ऐसा व्यक्ति कोई तो होगा जिसने कभी चोरी नहीं की?''

दुकानदारों के नेता ने कहा- ''महाराज! हम लोग तो अपनी करतूत के लिए प्रसिद्ध हैं। किसी वस्तु को एक किलो तोलते हैं तो घर जाके ६०० ग्राम निकलती है। चोरी तो हो गई। हममें से कौन कहेगा कि उसने जीवन में कभी चोरी नहीं की?''

राजा ने ठेकेदारों की ओर देखा। ''ठेकेदारों ने कहा-महाराज! हमारी तो प्रतिदिन रिपोर्ट होती है। हम पुल बनाने का ठेका लेते हैं। उसमें सीमेंट के स्थान पर रेत डाल देते हैं। दो ही वर्षों के बाद पुल टूट जाता है। फिर कैसे कहें कि हम चोर नहीं?''

राजा ने राज्य-कर्मचारियों की ओर देखा तो वे बोले। ''महाराज! आप वेतन देते हैं थोडा, फिर भी हम बड़ी-बड़ी कोठियाँ बनवाते हैं। वे जिस प्रकार बनती हैं यह आप भी जानते हैं और हम भी। फिर कैसे कहें कि हमने चोरी नहीं की है।''

राजा ने मंत्रियों की ओर देखा और उन्होंने भी यही उत्तर दिया। अब राजा भी घबराये। अपने छोटे भाई की ओर देखकर बोले- ''तुम ही उठो।''

भाई ने कहा- ''महाराज! सच्ची बात यह है कि मैंने एक बार चोरी की थी। मैं कालेज में पढ़ता था तो मेरा मित्र एक बहुत सुन्दर पुस्तक खरीद कर लाया। जब वह दूसरे कमरे में गया तो मैं उसकी पुस्तक उठाकर चला आया। मुझसे यह कार्य नहीं होगा।

राजा ने तंग आकर कहा- ''तब मैं ही इस बूटी को उठाकर लोहे पर डालता हूँ।'' याद आता है कि मैंने भी एक बार चोरी की थी। जब मुझे एक बार बुखार हो गया था। डॉ. ने पेडे खाने से मना कर दिया था। अपनी माँ के पास पेड़े देखे। मैंने पेड़े खाने की हट की परन्तु मेरी माँ ने मना कर दिया और वह पेड़ों को एक अलमारी में रखकर दूसरे कमरे में चली गई। उसकी अनुपस्थिति में मैंने चुपके से अलमारी में पड़े पेड़े को खाया। माँ को बताया नहीं, इस प्रकार चोरी तो मैंने भी की।

चोर कहने लगा- '' जब सारे ही चोर हैं तो मुझे अकेले को फाँसी क्यों दी जा रही है? सबको फाँसी दो।''

अतः स्वयं के दोषों को दूर करने के लिए स्वयं के दोषों को देखो! दूसरे के दोषों को देखने से अपने दोष दूर नहीं होते। वस्तुतः हम सब आधे-अधूरे एवं अपूर्ण हैं और केवल एक परमात्मा ही पूर्ण है। इसी प्रकार जौक लिखते हैं-

दूसरों पर अगर तबसिरा कीजिए।
तो सामने अपने आईना रख लीजिए।

अतः हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभो! हमारे दुरितों को भगा दो। इस का भाव यह है कि जीवन-यात्रा में पड़ने वाले विध्न व बाधाएँ दूर करो। ये बाधाएँ अनेकों प्रकार की हैं जैसे लोभ, निर्धनता, अविद्या, आलस्य, रोग आदि। यदि सब कार्य ठीक है और जरा-सा भी दुरित रह गया हो तो कार्य ठीक नहीं होगा।

जैसे- आपका शरीर स्वस्थ एवं सुदृढ़ है परन्तु आपके पाँव की सबसे छोटी अंगुली में एक सरसों के समान फोड़ा हो गया। तो क्या आप ठीक प्रकार चल सकते हैं? वस्तुतः जीवन-यात्रा में आने वाली प्रत्येक कठिनाई दुरित है। जैसे अथर्ववेद में लिखा है-

उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम्।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र।। अथर्व. ८.४.२२

उल्लू, भेड़िए, कुत्ते, चिड़े, गरुड़, गिद्ध आदि की चालों को मार दो। इन राक्षसों को पत्थर से मसल-मसल कर मार डालो क्योंकि ये सब दुरित मानव-जीवन में बाधक हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि 'दुः' त्यागने से ही 'सु' की उपलब्धि होती है। जहाँ पर 'कु' होगा वहां पर 'सु' नहीं रह सकता। हमारे कहने का तात्पर्य यह है कि 'कु' व 'सु' एक स्थान पर नहीं रह सकते। जब हम अपने जीवन से दुरित को निकालकर बाहर फैंक देते हैं तो हमें स्वतः ही भद्र की प्राप्ति हो जाती है। कुप्रथाओं को त्यागने से ही सुप्रथाओं का प्रचलन होगा। यदि कोई कमरा कूड़े-करकट से भरा पड़ा है, यदि हम उसमें सजाकर शुद्ध पवित्र वस्तुएँ रखना चाहते हैं तो पहले उस कूड़े-करकट को कमरे से बाहर फेंकना पड़ेगा। इसी प्रकार हमें अपने व्यक्तित्व से सब दुरितों को उसी प्रकार निकालकर बाहर फैंकना होगा, जैसे- कमरे से कूड़ा-करकट फेंका जाता है। इसी प्रकार यदि हम परिवार, संस्था, राष्ट्र और विश्व का सुधार करना चाहते हैं तो इसमें से सब प्रकार की बुराइयों को निकालना पड़ेगा और वहाँ पर अच्छाइयाँ स्वतः ही आ जाएँगी, क्योंकि यह एक सर्वमान्य सत्य है-कि अच्छाई और बुराई कभी भी एक साथ नहीं ठहर सकते।

मानव जीवन के मुख्य तीन दोष निम्नलिखित हैं-

१. काया के तीन दोष- चोरी, व्यभिचार व हिंसा।

ओ३म् सप्त मर्यादाः कवयस्ततक्षुस्तासामिदेकामभ्यंहुरो गात्।
आयोर्ह स्कम्भ उपमस्य नीडे पथां विसर्गे धरुणेषु तस्थौ।।

- ऋग्वेद १०.५.६, अथर्व. ५.१.६

वेदों में सात मर्यादायें निर्धारित की गई हैं। मर्यादा का अर्थ है मनुष्य को खा जाने वाली। जो व्यक्ति इन बुराइयों को अपनाता है उसका जीवन नष्ट हो जाता है। परन्तु मंत्र में जिन सात बातों का निषेध किया गया है और जिनको वेद में निषेध वाक्य के नामों से पुकारा जाता है। वे निम्नलिखित हैं-

१. स्तेनम् - चोरी करना।
२. तल्पारोहणम् - व्यभिचार करना।
३. सुरापानम् - शराब पीना।
४. भ्रूण हत्या - गर्भ के बच्चे को मारना।
५. ब्रह्म हत्या - विद्वान् को मारना।
६. दुष्कृतस्य कर्मणः पुनः पुनः सेवनम् - बुरे कर्म को बार-बार करना।
७. पातके नृतोद्यम् - पाप करके झूठ बोलना।

यास्काचार्य ने इन ७ मर्यादाओं के विषय में लिखा है-

उल्लू की चाल अर्थात् अन्धकार-अज्ञान से मोह युक्त व्यवहार का परित्याग कर

भेड़िये के चाल अर्थात् क्रोध का परित्याग कर

कुत्ते के व्यवहार अर्थात मात्सर्य, जलन का परित्याग करो

चिड़े की चाल अर्थात् अत्यन्त कामातुरता का विनाश करो

स्तेयं तल्पा रोहणं, ब्रह्महत्यां, भ्रूणहत्यां, सुरापानं, दुष्कृतस्य कर्मण पुनः पुनः सेवां, पातके नृतोद्यमिति -निरुक्त (नैगम काण्ड ६.५)

इनमें चोरी, व्यभिचार, ब्रह्महत्या, गर्भपात, असत्यभाषण बार-बार बुराकर्म करना, शराब पीना।

बिना आज्ञा के किसी भी व्यक्ति की वस्तु अथवा अपहरण करना, परस्त्रीगमन करना और किसी भी निर्दोष व्यक्ति की हत्या करना कायिक दोष हैं। इन तीनों दोषों का परित्याग ही मानव को चरित्रवान् एवं महान् बनाता है। जो व्यक्ति चरित्रवान् होता है। लोग उसका हृदय से आदर करते हैं और उस पर विश्वास रखते हैं। रिश्वत लेना और अनुचित व्यापार करना भी चोरी है। महात्मा गाँधी जी ने तो यहाँ तक लिखा है कि अपने घर में आवश्यकता से अधिक वस्तु संग्रह भी चोरी है। इसी प्रकार व्यभिचार भी काम वासना की चोरी है।

२. वाणी के तीन दोष- गाली, निन्दा और झूठ।

गाली, निन्दा और झूठ वाणी के मुख्य दोष हैं। इनका प्रयोग करने से मानव का चरित्र एवं विश्वास जाता रहता है। गाली-गलौच से क्रोधाग्नि प्रज्ज्वलित होती है। यहाँ तक कि कई बार मारपीट और हत्या तक घटनाएँ हो जाती हैं इसलिए हमें प्रियभाषी होना चाहिए जिससे पराये भी अपने हो जाते हैं और चतुर्दिक सुख एवं शांति फैल जाती है। जैसे तुलसीदास जी ने लिखा है-

तुलसी मीठे वचन ते, सुख उपजत चहुँ ओर।
वसीकरन यह मंत्र है तजदे वचन कठोर।।

गरुड़ की चाल अर्थात् अहंकार की भावना को कुचल दो

गिद्ध की चाल अर्थात् लोभ की प्रवृत्ति को कुचल डालो

मन के चार दोष- क्रोध, अंधकार, ईर्ष्या एवं छल।

३. वस्तुतः काम, क्रोध, अंहकार, ईर्ष्या आदि मानव के मानसिक शत्रु हैं जो कि जीवन में बाधक हैं। अतः मानव जीवन में सुख-शान्ति और आनंद की प्राप्ति के लिए काम को संयम, क्रोध को क्षमा, लोभ को संतोष, मोह को विवेक, अहंकार को नम्रता और ईर्ष्या को अन्तःप्रेरणा से जीतना चाहिए। वस्तुतः ये सब विकार अहंकार से ही उत्पन्न होते हैं क्योंकि अहंकार को पाप का मूल कहा गया है।

इसके विपरीत वेद में कुछ विधि वाक्य भी हैं जिन पर आचरण करना वेदानुकूल है। जिसमें मानव का कल्याण हो सकता है। जैसे-

ओ३म् अश्मन्वती रीयते सं रभध्वमुत्तिष्ठत प्र तरता सखायः।
अत्रा जहाम ये असन्नशेवाः शिवान्वयमुत्तरेमाभि वाजान्।। - ऋग्वेद १०.५३.८, अर्थववेद. १२.२.२६

पथरीली नदी वेग से बह रही है। हे साथियो प्रबलता से तर जाओ। आओ, जो हमारे अकल्याणकारी संग्रह हैं उन्हें हम छोड़ दें और कल्याणकारी सुखों, बलों और ज्ञानों को पाने के लिए हम इस नदी को पार कर जाएँ।

ओ३म् स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि।। - ऋग्वेद ५.५१.८

हम सूर्य एवं चन्द्रमा के समान स्वयं कल्याण मार्ग का अनुसरण करें। इसके पश्चात् दानी, अहिंसक और ज्ञानी व्यक्तियों की संगति करें।

प्रस्तुतः मंत्र में पापों को क्षमा करने के लिए प्रभु से प्रार्थना की गई है। परन्तु किये हुए कर्मों को अवश्य भोगना पड़ता है। प्रत्येक व्यक्ति कर्म करने में पूर्ण स्वतंत्र है परन्तु फल भोगने में ईश्वरीय व्यवस्था के अनुसार परतंत्र है। जैसे महर्षि वेद व्यास ने ''महाभारत'' में लिखा है-

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं।

जो भी किसी व्यक्ति ने शुभ या अशुभ कर्म किये हैं, उसको उनका फल अवश्य ही भोगना पड़ेगा। यहाँ तक कि प्रभु शरण में भी पापों से कभी भी मुक्ति नहीं हो सकती, परन्तु पापों का पश्चाताप करने से पापों के फल को सहन करने की शक्ति बढ़ जाती है।

अंततः इतना ही कहना काफी है कि व्यक्ति को बुराइयों को दूर करके अपना जीवन बेहतर बनाना चाहिए। जैसे किसी उर्दू शायर ने लिखा है-

गर कल में बेहतर नहीं हुए तुम।
तो एक दिन की दौलत हुई तुम से गुम।।

अब प्रश्न उठता है कि इन दुर्गुणों को कैसे दूर किया जाए। वस्तुतः इन दुगुणों को दूर करने के मुख्य उपाय निम्नलिखित हैं।

१. **आत्म-निरीक्षणः** व्यक्ति को रात को सोने से पूर्व आत्म-निरीक्षण करना चाहिए कि मैंने क्या-क्या गलत काम किये और उन्हें दूर करके अपने जीवन को अच्छा बनाना चाहिए।
२. **प्रबल इच्छाशक्तिः** व्यक्ति में यदि कोई दुर्गुण एवं दुर्व्यसन है तो उसे प्रबल इच्छाशक्ति के द्वारा छोड़ देना चाहिए।
३. **प्रायश्चितः** अपने दुर्गुणों के लिए प्रायश्चित भी करना चाहिए कि अमुक गलती मैं आगे से नहीं करूँगा। तभी उसका जीवन सुधरेगा।
४. **कुसंग त्यागः** उसे कुसंग का त्याग कर देना चाहिए क्योंकि कुसंग के कारण ही दुर्गुण आते हैं।
५. **सत्संगः** उसे सत्संग करना चाहिए ताकि उसका जीवन गुणों की खान बन जाए।
६. **स्वाध्यायः** जिस ग्रंथ का व्यक्ति स्वाध्याय करता है। उस लेखक से उसका सत्संग हो जाता है।
७. **प्रभुभक्तिः** यदि कोई व्यक्ति सच्चे दिल से प्रभुभक्ति करने लग जाये तो उसके सारे पाप दूर हो जाएँगे और वह पुण्यात्मा बन जाएगा और प्रभु भक्ति में उसे आनंद आने लगेगा। इसमें प्रभु स्तुति, प्रार्थना और उपासना आ जाती है।
८. **परोपकार करनाः** यदि व्यक्ति परोपकारी कार्य करेगा जैसे किसी गरीब की सहायता करना, दान देना, निष्काम सेवा करना आदि तो स्वतः ही वह अच्छा आदमी बन जायेगा। जैसे एक हिन्दी कवि ने कहा है -

परोपकार के गुण अपने अंदर लाता जा।
जो अवगुण हैं तेरे अंदर उनको दूर भगाता जा।।

- धर्मपाल कपूर
(साभार- वेदवाणी)

❑❑❑

मानव मात्र की सेवा
को अर्पित हो जब
संघर्ष ।
सदा लहराती
कीर्ति पताका,
हर क्षण मिलता हर्ष।।

सत्यार्थ-सौरभ घर-घर पहुँचावें

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

वैदिक संस्कृति एक सरल परिचय - अशोक आर्य
एक ऐसी पुस्तक जो वैदिक संस्कृति के विभिन्न सोपानों को बड़े सरल शब्दों में व्याख्यायित करती है। भारत की संस्कृति ऐसी महान् है जिसके कारण भारत विश्वगुरु की प्रतिष्ठा प्राप्त कर सका। आज भी विश्व भारत से बहुत कुछ सीखना चाहता है। ब्रह्मा से लेकर महर्षि दयानन्द पर्यन्त साक्षात्कृतधर्मा ऋषि तथा श्रीराम, श्रीकृष्ण जैसे पुरुषोत्तम इसी संस्कृति की देन हैं। हमारी संस्कृति वेद संस्कृति है। स्वयं परमपिता परमात्मा की आज्ञा हमारी जीवन पद्धति है। उक्त पुस्तक में इस सब को अत्यन्त सरलरूप से प्रस्तुत कर वैदिक दर्शन व संस्कृति को समझने का प्रयास कर रहे अध्येताओं के लिए यह सफलतम प्रारंभिक पुस्तक है। किसी को भी उपहार देने के लिए इस पुस्तिका की उपयोगिता निश्चित है। मूल्य मात्र २५/-

कम मूल्य में सत्यार्थ प्रकाश का मानक संस्करण
उपलब्ध कराने हेतु
श्री इन्द्रदेव गुलाटी द्वारा १००००रु. का योगदान
आप भी सहयोग करें

स्मृतिशेष महापंडित आचार्य विशुद्धानन्द 'मिश्र' — एक अनभ्रवज्रपात

आज जिसकी वियोगाशनि से हृदय छिन्न भिन्न हो गया है, जिसके वियोगबाण ने कलेजे को बींध दिया है, जिसके शोकानल की ज्वालायें प्राण-पखेरू के पंख को जलाये डालती हैं- वह आर्य समाज की दिग्दिगन्त व्यापिनी कीर्त्तिलता को अपने उष्ण रक्त से सिञ्चन करने वाले काल विकराल की कुचाल में आकर महाप्रयाण को प्राप्त आचार्य विशुद्धानन्द ही हैं। निर्दय काल-पवन के एक ही निष्ठुर प्रहार ने जिस भव्य मूर्ति को तोड़कर हृदय मन्दिर को सूना कर दिया है, अपने यश-सौरभ और पाण्डित्य परिमल से सज्जन विद्वन्मधुकरों को तृप्त करने वाले जिस अपूर्व पुरुष की जीवन नलिनी को मृत्यु मातध ने उखाड़कर अपनी दुरत्तपूरा उदर दरी में धर लिया है, वह अभ्रस्पर्श करने वाली आर्य समाज रूपी गगनचुम्बी अट्टालिका का आधार भारत का रत्न, भारती का बड़भागी भक्त, सुमति का प्रसिद्धसिद्ध सागर ज्ञानपूषण, ज्ञानभूषण सबका शिरोभूषण दूषणविहीन आचार्य विशुद्धानन्द ही हैं।

हा दुर्दैव निदाध काल! तूने इस मूर्ख बहुल संसार के एक मात्र विशुद्धानन्द रूपी विद्वत् सरोवर को सहसा सुखाकर गतिक जिज्ञासु-मीनों को निर्जीव बना दिया। हाँ दूरहष्ट प्रचण्ड पवन! तेरे एक ही प्रलयङ्कारी झोंके ने उपदेशामृतवर्षी पण्डित पर्जन्य को पिपासाकुल शुश्रुषु चातकों की आशा भरी दृष्टि से दूर क्यों किया? भ्रम-सन्तापहारी सुस्निग्धछाय वेदान्त-तरु को उच्छिन्न करके तुझे क्या मिला? धिक् विधे! तुम्हारे इस अनाड़ीपन और खिलाड़ीपन को कहाँ तक रोवें?हजार दिक्कतों और कोशिशों के बाद एक ऐसा सुन्दर खिलौना बनाकर तैयार करते हो और फिर उसे यों ही बेदर्दी से तोड़ डालते हो। योगिराज भर्तृहरि ने इसी मूर्खता पर तुम्हें खूब फटकार भी बताई है।

''सृजति तावदेशेषगुणाकरं, पुरुषरत्नमलङ्करणं भुवः। तदपि तत्क्षणभङ्गि करोति चे, दहह कष्टमपण्डितता विधेः।।''

कोई कुछ भी कहो, कितना ही रोओ चिल्लाओ, उपालम्भ दो, या फटकार लगाओ, तुम्हें तो हे हतविधि! अपने काम से काम, आखिर तुम वज्रहृदय किसकी सुनते हो? हे आचार्य! इस वाटिका में अनेक फूल खिलेंगे जो देखने में मनोहर भी होंगे,पर उनमें वह दिव्यगन्ध न होगी। इस वेदी पर अनेक वक्ता आवेंगे- पर उनमें वह बात न होगी। अनेक लेखक होंगे- पर 'वेदार्थ कल्पद्रुम' प्रणेता न होगा। बहुत से नक्काल निकलेंगे और निकल रहे हैं, वह असलियत कहाँ से लावेंगे, डिप्लोमे वा डिग्रियाँ उस कमी को पूरा कैसे कर सकेंगी। यह अलौकिक निःस्पृहता, स्पष्टभाषिता , विद्वता और प्रतिभा मात्र प्रयत्नप्राप्य पदार्थ नहीं है, ये चीजें तो किसी विरले भाग्यवान् में ही वह विधाता देता है। आप जैसे अपूर्व असाधारण गुणसम्पन्न महापुरुष सैंकड़ों वर्षों और लाखों मनुष्यों में कभी-कभी प्रकट होकर अपना अद्भुत चमत्कार दिखा जाते हैं। आप जैसे ही अनर्घ नररत्नों को धारण करने के कारण पृथिवी 'वसुन्धरा' कहलाती है। हे पूज्य गुरुवर! आपकी भोली भाली प्रसन्नवदनं मूर्त्ति आँखों में फिर रही है, आपकी मधुर ध्वनि कर्णकुहरों में गूँज रही है, आपके विचित्र भाषण, युक्तियाँ, परिहास प्रियता, विदग्धपाण्डित्ययुक्तशास्त्रचर्चा, निष्कपट व्यवहार रह-रहकर याद आ रहा है।

हे आचार्य! आप हृदय के अन्दर फिर रहे हो, पर हाथ नहीं आते, पास बैठे बातें कर रहे हो और आर्त्तविलाप नहीं सुनते। अपनी सब कुछ कह रहे हो, पर हमारे करुण क्रन्दन पर तनिक कान नहीं धरते। खूब, हमारे प्राणों पर आ बनी है और आपको परिहास की सूझी है। बस बहुत हो चुकी, अब दया करो, शीघ्र आओ, या अपने पास बुलाओ, इस दशा में तो नहीं रहा जाता।

आपने ही तो कहा था कि 'दुरुहस्थलों पर निशान कर रक्खो, जो शङ्काएँ हों उन्हें लिखकर रक्खो, अबकी बार विशद और विस्तृत व्याख्या द्वारा सब सन्देह दूर कर देंगे। मैं कागज कॉपी पैंसिल लिए बड़े उत्कण्ठित चित्त से आँखें फाड़कर आपके आगमन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ, आने की अवधि के दिन अङ्गुलियों पर गिन रहा हूँ। अगर अवधि बीत गई और आप नहीं आए तो यह उत्तर जरूर भेज देना, कि मैं कब तक लौटने की आशा रक्खूँ।

-इसी प्रतीक्षा में, आपका प्रिय शिष्य

- वेद प्रकाश श्रोत्रिय

❑❑❑

श्री दीपक जी महाजन नहीं रहे

महाशय धर्मपाल जी के दामाद श्री दीपक महाजन का निधन समस्त परिचितों व आत्मीयजनों के लिए दुःखद व स्तब्धकारी है। उनकी सौम्य, हँसमुख छवि हमारी आँखों के सम्मुख घूम रही है। यूँ तो वियोग सदैव पीडादायक ही होता है परन्तु कम उम्र में किसी आत्मीय के चले जाने की पीड़ा शब्दों में वर्णित नहीं की जा सकती। सम्पूर्ण न्यास परिवार व सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से शोक संवेदना।

शोक संवेदना

आर्य समाज, पिछोली, उदयपुर के प्रधान श्री प्रकाश जी श्रीमाली की माता श्री का देहावसान दिनांक ६ अक्टूबर २०१२ को हो गया। सम्पूर्ण न्यास परिवार व सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से शोक संवेदना।

षोडश सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव - 2012

झीलों की नगरी, उदयपुर स्थित नवलखा महल, जहाँ युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द के कदम पड़े थे, जहाँ कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की रचना सम्पूर्ण हुयी थी, उस पावन स्थली पर षोडश सत्यार्थप्रकाश महोत्सव २०१२ का त्रिदिवसीय आयोजन ५ से ७ अक्टूबर २०१२ तक किया गया। इस कार्यक्रम में देश के मूर्धन्य विद्वानों यथा आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय, दिल्ली, डॉ.सोमदेव शास्त्री, मुम्बई, आचार्य हरिप्रसाद (व्याकरणाचार्य) नोएडा, आचार्य परमदेव मीमांसक, गुरुकुल टटेसर, श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता, डॉ.गायत्री पंवार, जयपुर, आचार्य वेदप्रिय शास्त्री, अहमदाबाद, डॉ.रघुवीर वेदालंकार, दिल्ली, डॉ.महावीर मीमांसक, दिल्ली, श्री रासासिंह रावत, पूर्व सांसद-अजमेर, अनेक राज्यों की आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारीगण यथा श्री सत्यव्रत सामवेदी, प्रधान, श्री अमरमुनि वानप्रस्थ, मंत्री- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, श्री दलवीर सिंह राघव, प्रधान-मध्यभारत आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, प्रधान- आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात, श्री विट्ठलराव, प्रधान- आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश, श्री भद्रकाम वर्णी, अध्यक्ष-महर्षि दयानन्द सिद्धान्त रक्षिणी सभा-दिल्ली, श्री विजय शर्मा, प्रधान-आर्य समाज भीलवाड़ा, श्री आर.डी.गुप्ता, प्रधान- आर्य समाज, दयानन्द नगर-गाजियाबाद। इस अवसर पर आर्य जगत् के शीर्षस्थ संन्यासियों पूज्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, पिपराली, पूज्य स्वामी आर्येशानन्द सरस्वती, पिण्डवाड़ा, पूज्य स्वामी आर्यवेश दिल्ली, पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, दिल्ली, पूज्य स्वामी (डॉ.) ओम् आनन्द सरस्वती, चित्तौड़गढ़, पूज्य स्वामी शारदानन्द सरस्वती, आबूरोड का सानिध्य प्राप्त हुआ। त्रिदिवसीय कार्यक्रम के प्रथम सत्र का आयोजन यज्ञ से हुआ जिनके ब्रह्मा क्रमशः डॉ.सोमदेव शास्त्री, मुम्बई, आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय, दिल्ली एवं व्याकरणाचार्य श्री हरिप्रसाद जी नोएडा थे ।

आध्यात्मिक प्रवचनः- डॉ.सोमदेव शास्त्री ने ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना क्यों करें? इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। आचार्य श्रोत्रिय ने अपने उद्बोधन में कहा कि मानव अज्ञान, अविद्या के कारण अशांत व दुःखी होता है, ब्रह्मयज्ञ व देवयज्ञ से वह दुःखों से दूर हो सकता है। आचार्य हरिप्रसाद ने कहा कि न्यायकारी ईश्वर मनुष्य को उनके कर्मों के अनुसार यथावत् फल प्रदान करता है। हम निम्न योनि को प्राप्त न हों, एतदर्थ हमें ईश्वरीय आज्ञा का पालन करना होगा।

इस षोडश महोत्सव का मुख्य आकर्षण दो सत्रीय सत्यार्थप्रकाश कार्यशाला का आयोजन रहा। महोत्सव में सत्यार्थ प्रकाश शिक्षा पर आधारित गृहस्थाश्रम अभ्युदय ,समाजोदय व राष्ट्रोन्नति विषयक सत्र आयोजित किए गए।

सत्यार्थ प्रकाश एवं गृहस्थाश्रम अभ्युदय :- प्रथम दिवस के सायंकालीन सत्र में श्रीमती शारदा गुप्ता, पूर्व उपाचार्य, मीरा कन्या महाविद्यालय-उदयपुर की अध्यक्षता में हुआ। आचार्य हरिप्रसाद ने कहा कि आज संसार में जितना अभ्युदय दिखाई देता है उन सबका आधार ऋषिकृत सत्यार्थप्रकाश है। ऋषि ने उत्तम संतान के लिए गृहस्थाश्रम व्यवस्था का पुरजोर समर्थन किया। आचार्य श्रोत्रिय ने कहा कि यद्यपि महर्षि दयानन्द ने गृहस्थाश्रम में प्रवेश नहीं किया था फिर भी गृहस्थाश्रम अभ्युदय कैसे हो उसकी सुन्दर व व्यवस्थित व्यवस्था सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में प्रदान की। डॉ.गायत्री पंवार ने कहा कि गृहस्थ का प्रबन्धन नारी के हाथों में है। इस सत्र का संचालन श्री जीववर्धन शास्त्री, बांसवाड़ा ने किया।

सत्यार्थ प्रकाश एवं समाजोदय :- द्वितीय दिवस का सायंकालीन सत्र पूज्यपाद स्वामी (डॉ.) ओम् आनन्द सरस्वती, चित्तौडगढ़ की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। आचार्य हनुवन्त सिंह ने कहा कि जब तक समाज की इकाई परिवार सुव्यवस्थित नहीं होते समाज की उन्नति संभव नहीं है। आचार्य वेदप्रिय शास्त्री ने कहा कि जब तक ऋषि प्रदत्त वैदिक विचारधारा को क्रियान्वित नहीं किया जायेगा तब तक ऋषि के सपनों का समाज स्थापित नहीं किया जा सकता। इस सत्र का संचालन श्री ओ.पी.वर्मा, प्रधान आर्य समाज, किशनपोल बाजार, जयपुर द्वारा किया गया। इस अवसर पर न्यास के संरक्षक स्वर्गीय कैप्टन देवरत्न आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता आर्या ने सुन्दर सुव्यवस्थित विस्तृत पुस्तकालय के लिए १.५० लाख रु. सहायता प्रदान की। सत्यार्थ प्रकाश अस्मिता के संरक्षक एवं आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् पूज्य आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र की श्रद्धांजलि सभा अत्यन्त भावुक वातावरण में आयोजित की गई।

सत्यार्थ प्रकाश एवं राष्ट्रोन्नतिः- तृतीय दिन के अंतिम सत्र में आचार्य परमदेव मीमांसक की अध्यक्षता में सत्यार्थ प्रकाश एवं राष्ट्रोन्नति विषय पर चर्चा की गई। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मंत्री अमरमुनि वानप्रस्थ ने कहा कि भौतिक उन्नति के साथ आध्यात्मिक उन्नति से ही राष्ट्रोन्नति संभव है। डॉ.रघुवीर वेदालंकार ने कहा कि जब देश के नेता चरित्रवान् व वेदज्ञ होते हैं तभी राष्ट्र की उन्नति होती है। श्री आर.डी.गुप्ता ने कहा कि जब चारों आश्रम सुदृढ़ होते हैं तब राष्ट्र की उन्नति होती है। सत्र का संचालन प्राचार्य सीमा श्रीमाली, चित्तौडगढ़ ने किया। इस अवसर पर श्री केशवदेव शर्मा, सुमेरपुर, श्री ब्रजपाल कर्मठ, मुजफ्फरनगर, श्री इन्द्रदेव पीयूष, श्रीमती सुमन उज्ज्वल, उदयपुर श्रीमती वेद साहनी, जयपुर ने भजनों की सुन्दर प्रस्तुतियाँ प्रदान की। न्यास मंत्री श्री भवानीदास आर्य व उपमंत्री डॉ.अमृतलाल तापड़िया ने सभी विद्वानों, संन्यासीगणों व आर्यजनों का आभार व्यक्त किया। शान्ति पाठ के बाद समारोह का समापन हुआ।

\- सरोज वर्मा, न्यास प्रवक्ता

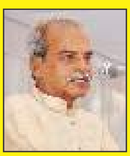
श्री आनन्द कुमार आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा पश्चिम बंगाल के बढ़ते कदम – न्यायिक निर्देशों के पश्चात् भी पश्चिम बंगाल की सरकार की निष्क्रियता के परिणामस्वरूप गो-वंश वध रोकने में रूचि न होने के कारण आर्य प्रतिनिधि सभा ने अत्यन्त व्यापक स्तर पर गो-भक्तों को सामूहिक रूप से जोड़कर एक विशाल जन आन्दोलन खड़ा किया है। ६ अक्टूबर २०१२ को इसी क्रम को सहस्रों गो-भक्तों की एक सभा होगी। गो-रक्षा के इस महान् प्रत्यत्न को नमन करते हुए इसकी सफलता की कामना के साथ प्रभु से प्रार्थना करते हैं - सत्यार्थ-सौरभ परिवार

श्री दीनदयाल गुप्त

सत्यार्थ प्रकाश कार्यशाला

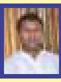

प्रकाशित ग्रन्थ की उपस्थिति में प्रथम पाण्डुलिपि को स्वत: प्रमाण की संज्ञा नहीं दी जा सकती।
ऋषि ने द्वितीय संस्करण में स्वयं संशोधन कर उसमें परिवर्तन किए हैं। अत: वही संस्करण प्रामाणिक है। – आचार्य हरिप्रसाद जी, नोएडा

लेखन क्रम की प्राय: सभी त्रुटियों का निराकरण महर्षि ने कर दिया था। अत: द्वितीय संस्करण ही प्रामाणिक है।
– आचार्य वेदप्रिय शास्त्री, अहमदाबाद

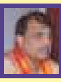

महर्षि दयानन्द ने प्रुफ को स्वयं देखा और अशुद्धियों को दूर कर सत्यार्थ प्रकाश का संस्करण द्वितीय मुद्रित हुआ।
अब कुछ शोधार्थियों ने पुन: उन अशुद्धियों को अपने संस्करण में स्थान दे दिया। – श्री अशोक आर्य, उदयपुर

१२५ वर्ष की सुदीर्घ परम्परा में आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वानों ने सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय संस्करण को ही प्रमाण माना है न कि पाण्डुलिपियों को। सत्यार्थ प्रकाश मूल रूप में रहेगा तभी हमारा (आर्यों का) अस्तित्व रहेगा। – सोमदेव शास्त्री, मुम्बई

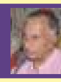

हमें आपस में प्रीतिपूर्वक शास्त्रार्थ का आयोजन करना चाहिए, जिससे ऋषि के ग्रन्थ की रक्षा की जा सके।
– भद्रकाम वर्णी, दिल्ली

सत्यार्थ प्रकाश के सन्दर्भ में यदि शास्त्रार्थ का आयोजन होता है तो सारा व्यय हम वहन करेगें।
– श्री आर.डी.गुप्त, गाजियाबाद

सत्यार्थ प्रकाश आर्य समाज का आधार है। मैं और मेरी १६ संस्थाएँ द्वितीय संस्करण की प्रतिष्ठा के लिए हर प्रकार से उपस्थित हैं।
– स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, उड़िसा

हम आर्यों को, आर्य संस्थाओं को सत्यार्थप्रकाश की रक्षा करने का अधिकार है उसमें परिवर्तन या संशोधन करने का कोई अधिकार नहीं। सत्यार्थ प्रकाश की अस्मिता की सुरक्षा मेरे लिए किसी भी प्रलोभन से ऊपर है। – श्री आनन्द आर्य, कोलकाता

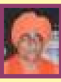

हमारी पत्रिकाओं को सभी आर्य जगत् के और गैर आर्य जगत् के लोग भी पढ़ते हैं, अत: इसमें ऐसी कोई बात नहीं होनी चाहिए जिससे हमारे सत्यार्थप्रकाश या ऋषि के ग्रन्थों पर कोई आँच आये। आज १२५ वर्ष पश्चात् यह कथन की उदयपुर में सत्यार्थ प्रकाश नहीं लिखा गया तथा भूमिका पर महर्षि के हस्ताक्षर उनके नहीं है, चिन्त्य है। – स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, पीपराली

मेरा ही नहीं हम सबका पक्ष ऋषि ही होना चाहिए। यह सिद्धान्त पक्ष है। द्वितीय संस्करण नि:संदेह प्रामाणिक है।
मिलजुल कर प्रीति पूर्वक समस्या का समाधान करना चाहिए। – डॉ. महावीर मीमांसक, दिल्ली

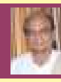

जिस ऋषि की भाषा व भाव को पढ़कर गुरुदत्त जैसे अनेक व्यक्तियों का जीवन बदल गया उसको बदलने का अधिकार किसी को नहीं। – आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय, दिल्ली

सत्यार्थ प्रकाश किसी सभा की निजी सम्पत्ति नहीं है। सभाओं का कार्य रक्षा करने तक है परिवर्तन करने का अधिकार किसी को नहीं। – डॉ.रघुवीर वेदालंकार, दिल्ली

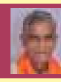

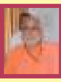

जिम्मेदार लोगों ने निज कर्त्तव्य पूर्ण रूपेण भुला दिया है। पत्रिकाओं में ऐसे तथ्यों को प्रकाशित कर रहे है जिससे अकल्पनीय हानि हो सकती है। –स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, दिल्ली

विद्वानों की समिति बने। तथाकथित शोधार्थी भी इसे स्वीकार करें तो सुखद स्थिति होगी।
– श्री दलवीर सिंह राघव, उज्जैन

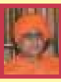

सत्यार्थ प्रकाश को लेकर कोई पक्ष-विपक्ष नहीं हो सकता हम सब सत्यार्थ प्रकाश की अस्मिता की सुरक्षा को सर्वोपरि मानते हैं।
– स्वामी आर्यवेश, दिल्ली

इसमें किसी को काई संदेह नहीं कि सत्यार्थ प्रकाश का द्वितीय संस्करण ही प्रामाणिक है।
हम इसकी प्रतिष्ठा के लिए सब कुछ करने को तैयार हैं। – श्री विट्ठलराव, हैदराबाद

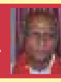

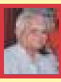

परिवर्तन करने की सोच भी असह्य है, राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा ऐसे उपाय अवश्य करेगी जिससे ऐसी सोच रखने वालों को सद्बुद्धि आ जावे। – श्री सत्यव्रत सामवेदी, जयपुर

अब अरण्य-रोदन का समय नहीं है। क्रियाशीलता परिणाम दायक हो चाहे इसके लिए कुछ भी करना पड़े।
हम इसके लिए तैयार हैं। – आचार्य परमदेव मीमांसक, टटेसर

समन्वयात्मक दिशा में प्रयास चल रहे हैं। अतिशीघ्र सत्यार्थ प्रकाश के संस्करण दो पर आधारित स्वरूप का मार्ग प्रशस्त हो जावेगा। – श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, अहमदाबाद

माँ का कर्ज

एक बेटा पढ़-लिखकर बहुत बड़ा आदमी बन गया। पिता के स्वर्गवास के बाद माँ ने छोटे-मोटे काम करके उसे काबिल बनाया। शादी के बाद उसकी पत्नी उसकी माँ से शिकायत करने लगी कि वो उनके स्टेटस में फिट नहीं बैठती। लोगों को बताने में उसे संकोच होता है कि ये अनपढ़ उसकी सासू माँ है।

एक दिन बेटे ने माँ से कहा, ' माँ, मैं चाहता हूँ कि मैं और तुम सुखी रहें।' अब मैं इस काबिल हूँ कि तुम्हारा सारा कर्ज सूद सहित उतार दूँ। फिर हम अलग-अलग रहेंगे और सुखी रहेंगे। तुम बताओ कि कितना कर्ज है? मैं सूद सहित उतार दूँगा। माँ ने कहा, हिसाब लगाना पड़ेगा। बेटे ने कहा, कोई बात नही, दो चार दिन में बता देना। एक रात बेटा गहरी नींद में सो रहा था। माँ ने एक लोटा पानी उसके बिस्तर पर डाल दिया। बेटे ने करवट बदली तो उधर भी पानी डाल दिया। परेशान हो बेटा खीझ कर बोला, माँ ये क्या कर रही हो? सारी नींद खराब कर दी। माँ ने कहा, हिसाब लगा रही हूँ कि तेरे बचपन में मैंने कितनी रातें गीले बिस्तर में जाग कर बिताई हैं। अभी तो पहली ही रात है। अभी से घबरा गए तुम? माँ की बात ने बेटे को झकझोर दिया। उसे एहसास हो गया था कि माँ का कर्ज कभी भी नहीं चुकाया जा सकता।

मंत्र- माँ का कर्ज कभी भी नहीं उतारा नहीं जा सकता।

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, प्रो. आई. जे. भाटिया एवं

स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती
पिण्डवाडा

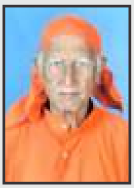
स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती
सायला गुजरात

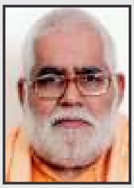
स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती
दिल्ली

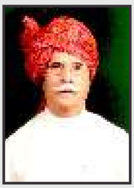
श्री राव हरिचन्द आर्य
नागपुर

श्री दीपचंद आर्य
किरतपुर

श्री रघुनाथ मित्तल
भीलवाड़ा

श्री जयदेव आर्य
भीलवाड़ा

श्री श्रवण कुमार गुप्ता
गुड़गाँव

प्रो. आर.के. एरन
उदयपुर

श्री लक्ष्मण सराफ
भीलवाड़ा

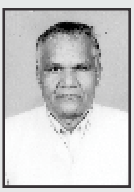
श्री खुशहालचंद्र आर्य
कोलकाता

श्री कृष्ण चौपड़ा
यू.के.

श्री नरेश कुमार राणा
नई दिल्ली

श्रीमती पुष्पा गुप्ता
उदयपुर

श्री विजय तायलिया
उदयपुर

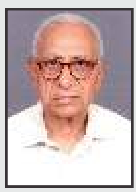
श्री वीरेन्द्र मित्तल
उदयपुर

श्री मोती लाल आर्य
आबूरोड़

"सत्यार्थ दूत"
श्रीमती सरोज वर्मा
जयपुर

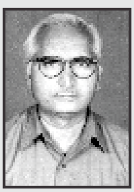
श्री एम.पी. सिंह
उदयपुर

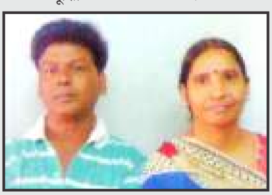
श्री राजकुमार गुप्ता एवं श्रीमती सरला गुप्ता
उदयपुर

श्री विकास गुप्ता
नोएडा

श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक
बैंगलुरू

डॉ. मोतीलाल शर्मा
जयपुर

स्वतंत्रता सेनानी की पुण्यतिथि पर प्रतियोगिता का आयोजन

स्वतंत्रता सेनानी श्री हरिसिंह जी आर्य की पंचम पुण्यतिथि पर दिनांक १५ अगस्त २०१२ (रविवार) को स्वामी सेवानन्द सरस्वती वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार न्यास, जयपुर की ओर से प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में जयपुर और अजमेर शहर की बीस शिक्षण संस्थाओं के कुल ३६ विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम श्री एम.एल. गोयल पूर्व शिक्षा परामर्शदाता, बिनानी सीमेंट लिमिटेड बिनानीग्राम (सिरोही) एवं पूर्व निदेशक डी.ए.वी संस्थाऐं, राजस्थान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि प्रो. रासासिंह जी रावत, पूर्व

सांसद अजमेर, भारतीय जनता पार्टी अजमेर शहर के अध्यक्ष, प्रधान आर्यसमाज अजमेर, प्रमुख अतिथि श्री सोमरत्न आर्य, पूर्व उपमहापौर अजमेर एवं वर्तमान में भारतीय जनता पार्टी अजमेर शहर के महामंत्री, आमंत्रित अतिथि डॉ. सुभाष वेदालंकार, डॉ. मदन मोहन जावलिया, श्री रामेश्वर बम्बोरिया, डॉ. आलोक सक्सैना और श्रीमती अरुणा देवडा, रावत मिष्ठान भंडार जयपुर-जोधपुर विद्यमान थे। जयपुर शहर के गणमान्य व्यक्तियों के अतिरिक्त आर्यसमाज के पदाधिकारीगण एवं सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम संयोजिका श्रीमती सरोज आर्या ने अवगत कराया कि प्रथम वर्ग के प्रतिभागियों ने '**वर्तमान समाज में नारी की स्थिति**' और द्वितीय वर्ग के प्रतिभागियों ने '**बेटियाँ क्या चाहती है**?' विषय में अपने विचार प्रस्तुत किये। प्रतियोगिता के प्रथम वर्ग में सुश्री डिम्पल ज्ञानानी, डी.ए.वी स्कूल-प्रथम, श्री अर्पण बम्ब, महावीर पब्लिक स्कूल-द्वितीय, सुश्री तोषिका पारीक दयानन्द पब्लिक विद्यालय मानसरोवर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। विजेता प्रतिभागियों को श्रीमती अरुणा देवड़ा ने २१००/रु, श्री अशोक शर्मा, मंत्री मोती कटला ने ११००/रु, श्री गोपालसिंह खोवाल ने ११००/रु, आर्यसमाज आदर्श नगर जयपुर ने ५००/रु का नकद पुरस्कार क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय और सान्त्वना पुरस्कार प्रदान किया। प्रतियोगिता के द्वितीय वर्ग में सुश्री कामाक्षी, महावीर पब्लिक स्कूल, सी-स्कीम-प्रथम, सुश्री लीजा चन्देल, वीर बालिका विद्यालय-द्वितीय, श्री अमन शर्मा, श्री महावीर दिगम्बर जैन उ.मा. विद्यालय ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। विजेता प्रतिभागियों को श्रीमती शकुन्तला खत्री ने ३१००/रु, श्री मंयक भारती/ डॉ. हेमलता भारती ने २१००/रु, श्री ओमप्रकाश झालानी, आर्यसमाज बगरु ने ११००/रु, आर्यसमाज आदर्शनगर जयपुर ने ५००/रु का नकद पुरस्कार क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय और सान्त्वना पुरस्कार प्रदान किया।

– सत्यार्थ दूत श्रीमती सरोज वर्मा, जयपुर

आर्य समाज डोहरिया, तहसील शाहपुरा के तत्वावधान में २ अगस्त से १० अगस्त १२ तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। साथ ही इसी समाज द्वारा पूर्व में २० जुलाई से २२ जुलाई २०१२ तक वृष्टि यज्ञ करवाया गया जो कि एक सफल प्रयोग रहा। कार्यक्रम में समाज के पुरोहित श्री नवरत्न मल शर्मा ने पूर्ण दायित्व का निर्वहन किया।

कन्हैया लाल साहू, अध्यक्ष आर्य समाज, डोहरिया।

आर्य समाज, रामनगर, रुड़की द्वारा दिनांक ६ जुलाई को डॉ.श्यामाप्रसाद मुखर्जी की स्मृति में, १६ जुलाई २०१२ को १८५७ की क्रांति के नायक मंगल

पाण्डे की स्मृति में २३.७.१२ को चन्द्रशेखर आजाद एवं २३.७.१२ को ही लोक मान्य बाल गंगाधर तिलक की स्मृति में विशेष स्वस्ति यज्ञ करवाया गया। यज्ञ के बह्मा श्री मदनपाल शर्मा रहे।

– श्री तेजपाल सिंह, उपप्रधान, रूड़की

आर्य समाज दयानन्द मार्ग, भीलवाड़ा के प्रधान एवं आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के उप प्रधान श्री विजय शर्मा, आर्य उप प्रतिनिधि भीलवाड़ा के प्रधान श्री गणपत लाल आर्य व सभा मंत्री श्री रामकृष्ण छाता व उप प्रधान श्री कन्हैया लाल आर्य के मार्गदर्शन में भीलवाड़ा जिले के आर्य समाज, भीलवाड़ा, शाहपुरा, बनेड़ा, रायला, डोहरिया, नन्दराय, फूलियाकलाँ, देवरिया के पूर्ण आर्थिक सहयोग से कृण्वन्तो विश्वम् आर्यम् का लक्ष्य लेकर वेद वाणी के प्रचार-प्रसारार्थ जन-जागरण निर्मितार्थ आर्य उपदेशक कुँवर भूपेन्द्र सिंह जी, अलीगढ़ एवं श्री लेखराज शर्मा, भरतपुर द्वारा १० जुलाई २०१२ से १२ अगस्त २०१२ तक शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में सत्संगों का आयोजन बड़े धूमधाम के साथ सम्पन्न कराया गया। इन क्षेत्रों के अनेक विद्यालयों में भी कार्यक्रम की प्रस्तुति हुई।

–रामकृष्ण छाता, मंत्री, भीलवाड़ा

स्वतंत्रता सैनानी आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान (स्मृति शेष) श्री छोटू सिंह जी आर्य के ९२ वें जन्म दिवस के अवसर पर ११ से १७ अगस्त २०१२ में सप्त दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसके अंतर्गत छात्राओं का सम्मान, क्रोस कन्ट्री दौड़, निबन्ध, रंगोली प्रतियोगिता, रक्तदान शिविर, निःशुल्क चिकित्सा एवं जाँच शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राजगढ़ के पंडित विनोदीलाल दीक्षित को द्वितीय आर्य शिरोमणि उपाधि से अलंकृत किया गया। संपूर्ण कार्यक्रम के दौरान श्री छोटूसिंह जी आर्य के बहुआयामी कार्यक्रमों को स्मृत करते हुए उनके बताए रास्ते पर चलने का संकल्प लिया गया।

–अशोक आर्य, अलवर

दयानन्द मठ, चम्बा का वार्षिकोत्सव दिनांक १२ से १५ अक्टूबर २०१२ में आयोज्य। दयानन्द मठ,चम्बा के अध्यक्ष पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी के नेतृत्व में आयोज्य इस उत्सव के अवसर पर २८ व २९ सितम्बर को आँखों के निःशुल्क ऑपरेशन के द्वारा नेत्र चिकित्सा यज्ञ सम्पन्न होगा। इसी अवसर पर ऋग्वेद में वर्णित विश्व इतिहास में विलक्षण, दुर्लभ एवं अभूतपूर्व १२वें शारद यज्ञ का अनुष्ठान किया जायेगा। १६ अक्टूबर को प्रातः ६.३० बजे से प्रारम्भ होकर यह दुर्लभ यज्ञ अनवरत रूप से २७ घंटे पर्यन्त निरन्तर चलेगा और १७ अक्टूबर २०१२ को प्रातः ९.३० बजे यज्ञ की पूर्णाहुति होगी।

– स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, अध्यक्ष, दयानन्द मठ, चम्बा

आर्य वैदिक धर्म प्रदर्शनी

स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती जी के प्रयास से उक्त प्रदर्शनी तैयार की गई है। इसमें सीडी बैनर, एलबम आदि की संख्या ८० है। प्रदर्शन के लिए १०० फीट लम्बाई में स्थान की आवश्यकता होगी। इस प्रदर्शनी को कोई भी अपने समारोह में लगवा सकता है। दो आदमियों के आने जाने का किराया एवं उचित दक्षिणा आयोजक को देनी होगी।

– राकेश सोनी (संवाददाता राऊ)

हलचल

आर्य समाज,महर्षि दयानन्द मार्ग,बीकानेर की ओर से श्री ब्राह्मण स्वर्णकार

पंचायत भवन में श्री शिवकुमार शास्त्री के ब्रह्मत्व में चतुदिवसीय वेद कथा एवं यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर चित्तौड़गढ़ से श्री हरीशचन्द्र जी विद्यावाचस्पति, फलौदी से स्वामी सत्यानन्द जी, उज्जैन से श्री काशीराम अनल ने उपस्थित हो श्रोताओं को उद्बोधन प्रदान किया। संचालन समाज के मंत्री श्री महेश सोनी द्वारा किया गया। – महेश सोनी

महात्मा गोपाल स्वामी का निधन गत दिनों आर्य जगत् के प्रख्यात

लेखक, उपदेशक महात्मा गोपाल स्वामी का निधन हो गया। गोपाल स्वामी जी ने संन्यास दीक्षा नवलखा महल, उदयपुर में ही ली थी तथा उस अवसर की गई अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार अशक्त होते हुऐ भी वे प्रति वर्ष आयोजित महोत्सवों में अवश्य पधारते थे, गोपाल स्वामी जी ने अनेकों पुस्तकें लिखी थीं उनका निधन आर्य जगत् के लिए अपूरणीय क्षति है। न्यास परिवार की ओर से श्रद्धांजलि।

श्री के. एस. सुदर्शन दिवंगत राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के पूर्व सर संघचालक ८१ वर्षीय श्री के. एस. सुदर्शन का निधन दिनांक १५ सितम्बर

२०१२ को उस समय हो गया जबकि वे योगासन कर रहे थे। श्री सुदर्शन एक उत्कृष्ट समाजसेवी और प्रशासनिक क्षमता में दक्ष व्यक्ति के रूप में जाने जाते थे। मृत्यु के पश्चात् श्री सुदर्शन की स्वयं की इच्छा के अनुसार उनकी आँखे दान कर दी गईं हैं। सत्यार्थ-सौरभ परिवार की ओर से श्रद्धांजलि।

एफ.डी.आई. की स्वीकृती

खुदरा व्यापार के क्षेत्र में ५१ प्रतिशत की भागीदारी निवेश करने की सरकार की स्वीकृती के साथ ही समर्थन ओर विरोध की कवायद प्रारम्भ हो गई है। देखा जाए तो इस प्रश्न पर जो प्रतिक्रियाएँ आ रही हैं उस में राष्ट्रहित की सोच न होकर केवल राजनिति दिखाई देती है। कांग्रेस समर्थित जितनी सरकारें हैं उन्होंने केन्द्र सरकार के इस फैसले का स्वागत किया है। जबकि जिन राज्यों में विपक्षी दलों की सरकारें हैं उन्होंने इसका विरोध करने की ठान ली है। इस निर्णय के विरोध में २० सितम्बर को भारत बंद की घोषणा की गई है।

प्रतिस्वर

आपके द्वारा भेजा हुआ बेहतरीन मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का जुलाई २०१२ का अंक मिला। वेद सुधा-प्रार्थना-सफलता तथा सार्थकता लाजवाब है। इसमें प्रार्थना का अर्थ उसका तरीका तथा उसके उद्देश्य को भलीभांति समझाया गया है। आपके द्वारा लिखा 'आओ चुकाएँ ऋण माता-पिता का' शिक्षा देने वाला था। ओम प्रकाश बजाज की कविता चिड़चिड़े बुजुर्गों को लेकर काफी संवेदनशील लगी। डॉ.मोहम्मद कलाम अहमद का लेख चरित्र निर्माण देश के सम्मुख विभिन्न समस्याओं को सुलझाने के लिए अच्छे चरित्र की आवश्यकता पर बल देने वाला था। पत्रिका के अंक की सभी रचनाएँ इसको चार चाँद लगाने वाली थीं।

– प्रो.शाम लाल कौशल।

आप द्वारा आर्य समाज की सेवा में किए जा रहे समर्पण सेवा एवं श्रद्धा एवं अवैतनिक सेवा को प्रणाम करता हूँ। आप द्वारा उदयपुर से प्रकाशित सत्यार्थ सौरभ का प्रकाशन स्वर्गीय आचार्य की मोक्षस्थ आत्मा को शांति एवं पितृ तथा ऋषि ऋण के निमित्त एक महान् कार्य है। इस प्रयास के लिए मैं आपको लाखों धन्यवाद एवं यशस्वी दीर्घायु होने की प्रार्थना परमात्मा से करता हूँ।

– पंडित कांशीराम शर्मा

जून २०१२ का सत्यार्थ सौरभ प्राप्त हुआ। आर्य समाज नियम ३ के अनुसार वेद सुधा का पान किया। स्वयं के लिए शांति मिली। जब हम अन्यों का विचार करें तो देश की वर्तमान स्थिति देखकर देश का कारोबार राम भरोसे चलना,यथायोग्य व्यवहार न होना,गोवंश हत्या,पर्यावरण प्रदूषण आदि से देश की विकट अवस्था का ज्ञान दिग्दर्शित किया गया। यह विकट अवस्था वैचारिक क्रांति से शांति अवश्य प्राप्त होगी। जब हम सभी एक सूत्र में एक मत से चलें तो।

– रामभाऊ मूंगे

सादर नमस्ते। सत्यार्थ सौरभ का जुलाई २०१२ का अंक मिला। आकर्षक सामग्री है,पठनीय व स्मरणीय भी है। आदरणीय खुशहाल चन्द आर्य का लेख भी पढ़ा । उस पर चिन्तन किया। उन्होंने बिल्कुल सही कहा है। मैं उनको धन्यवाद देना चाहता हूँ।

– सोनालाल नेमधारी, मोरिशस

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नई दिल्ली

दिनांक २५ से २८ अक्टूबर २०१२ तक दिल्ली के स्वर्ण जयन्ती पार्क रोहिणी में आयोजित किया जा रहा है।
इस अवसर पर लगभग ३० देशों से प्रतिनिधि भाग लेंगे, समारोह की तैयारियाँ जोर शोर चल रही हैं।
भारत सरकार के रेल मंत्रालय ने सम्मेलन में जाने वाले लोगों को ५० प्रतिशत छूट की घोषणा की है।
विस्तृत जानकारी www.aryamahasammelan.com पर प्राप्त की जा सकती है।

ब्र. राजसिंह आर्य
महासम्मेलन संयोजक
०९३५००७७८५८

होटल में व्यवस्था चाहने वाले शीघ्र सम्पर्क करें।

महाशय धर्मपाल
स्वागताध्यक्ष

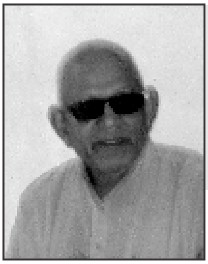

स्वामी शारदानन्द सरस्वती

वेदों में चिकित्सा विज्ञान की अवधारणा पर दार्शनिक एवं वैज्ञानिक अध्ययन

सभी प्रकार की औषधियों तथा अन्न की माता यह पृथ्वी ही तो है।

विश्वस्वं मातरमोषधीनां ध्रुवां भूमिं पृथिवीं धर्मणा धृताम।
शिवां स्योनामनु चरेम विश्वहा।। अथर्व १२.१.१७

प्राकृतिक चिकित्सा में मृदा का प्रयोग कई रोगों में किया जाता है। वेदों में प्राकृतिक चिकित्सा का अंकुरवत् वर्णन है तथा आयुर्वेद में इस विषय को पूर्णता दी गई है जो ऋग्वेद का उपवेद है।

ऋग्वेद तथा अथर्ववेद में आयुर्विज्ञान का वर्णन ३०० से भी अधिक मन्त्रों में हुआ है। इन मंत्रों द्वारा शरीर रचना, विवाह गर्भाधान, प्रसूति विज्ञान, शल्य चिकित्सा, विष चिकित्सा, रोग के कारण, मनोवैज्ञानिक चिकित्सा, औषध विज्ञान, रोगाणु नाशन आदि कई विषयों का विस्तृत वर्णन हुआ है। उन्हीं सबको लेकर आयुर्वेद विकसित हुआ है। हम वेद मंत्रों के द्वारा संक्षेप में इस विषय पर चिन्तन करते हैं। सृष्टि उत्पत्ति प्रकरण में संपूर्ण शरीर की रचना का वर्णन है। अथर्व. कांड २.३.३,अथर्व. काण्ड १० सूक्त २,कांड ११, सूक्त ८ तथा ऋग्वेद मण्डल ८ सूक्त ६३, मण्डल १० सूक्त १६३ में ही इतना विस्तृत वर्णन है कि शरीर रचना में जानने को कुछ शेष नहीं रहता है। यहाँ हम केवल ७ मंत्र दे रहे हैं।

दश साकमजायन्त देवा देवेभ्यः पुरा। यो वै तान्विद्यात्प्रत्यक्षं स वा अद्य महद्वदेत्।। अथर्व ११.८.३

अर्थ -प्राणियों के पूर्व संचित कर्म के अनुसार पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ उस ब्रह्म सामर्थ्य से उत्पन्न हुए। सूक्ष्मदर्शी पुरुष ही इसको जानकर परमात्मा का उपदेश करते हैं।

प्राणापानौ चक्षुः श्रोत्रमक्षितिश्चक्षितिश्च या। व्यानोदानौ वाङ्.मनस्ते वा आकूतिमावहन्।। अथर्व ११.८.४

(**प्राणा पानौ**) प्राण और अपान (भीतर जाने और बाहर आने वाला श्वास)।(**चक्षुः**) नेत्र (**श्रोत्रम्**) कान (**च**) और (**वा**) जो (**अक्षितिः**) सुख की निर्हानि (**क्षितिः**) दुःख की हानि (**व्यानोदानौ**) व्यान (सब नाड़ियों में रस पहुँचाने वाला वायु) और (**मनः**) मन (**ते**) इन सबने (**वै**) निश्चय करके (**आकूतिम्**) संकल्प को (**आ**) सब ओर से (**अवह्न**) प्राप्त कराया।

यदा केशानस्थि स्नाव मांसं मज्जानमाभरत्। शरीरं कृत्वा पादवत्कं लोकमनु प्राविशत्।। अथर्व ११.८.११

(**यदा**) जब प्राणी के (**केशान्**) केशों (**अस्थि**) हड्डी (**स्नाव**) सूक्ष्म नाड़ी(वायु ले चलने वाली नस)(**मांसम्**) मांस(**मज्जानम्**) मज्जा(हड्डियों के भीतर का रस) को (**आभरत्**) उस कर्त्ता ब्रह्म ने लाकर धरा और (**पादवत्**) पैंरो वाला (हाथ-पाँव आदि अंग वाला)।(**शरीरम्**)शरीर(**कृत्वा**) बनाकर(**कम् लोकम्**) कौन से स्थान में उस परमेश्वर ने (**अनु**) पीछे (**प्रअविशत्**) प्रवेश किया ।

ऊरू पादावष्टीवन्तौ शिरो हस्तावथो मुखम्। पृष्ठीर्बर्जह्ये पार्श्वे कस्तत्समदधादृषिः।। अथर्व ११.८.१४

(**ऊरु**) दोनों जंघाओं(**अष्टीवन्तौ**) दोनों घुटनों (**पाँव**) दोनों पैरों (**हस्तौ**) दोनों हाथों (**अथो**) और भी (**शिरः**)शिर (**मुखम्**) मुख (**पृष्ठीः**) पसलियों (**वर्जह्ये**) दोनों कुच की टीपनी (**पार्श्वे**) दोनों कोरवों को (**तत्**) तब(**कः**) किस (**ऋषिः**) ऋषि ने (**सम्अदधात्**) मिला दिया।

शिरो हस्तावथो मुखं जिह्वां ग्रीवाश्च कीकसाः। त्वचा प्रावृत्य सर्वं तत्संधा समदधान्मही।। अथर्व ११.८.१५

(**हस्तौ**) दानों हाथों (**शिरः**) शिर (**अथो**) और भी (**मुखम्**) मुख (**जिह्वाम**)जीभ (**ग्रीवाः**) गले की नाड़ियों(**च**) और (**कीकसाः**) हँसली की हड्डियों(**तत् सर्वम्**) इन सबको (**त्वचा**) खाल से (**प्रावृत्य**) ढक कर (**मही**) बड़ी (**संधा**) जोड़ने वाली शक्ति ब्रह्म ने (**सम् अदधात्**) मिला दिया।

चतुष्टयं युज्यते संहितान्तं जानुभ्यामूर्ध्वं शिथिरं कबन्धम्।
श्रोणी यदुरू क उ तज्जजान याभ्यां कुसिन्धं सुदृढ़ं बभूव।। अथर्व १०.२.३

(**चतुष्टयम्**) चार प्रकार से (**संहितान्तम्**) सटे हुए सिरों वाला (**जानुभ्याम् ऊर्ध्वम्**) दोनों घुटनों से ऊपर (**शिथिरम्-शिथिरं**)

ढीला (**कबन्धम्**) धड़ (**युज्यते**) जुड़ता है। (**यत्**) जो (**श्रोषी**) दोनों कूल्हे और (**ऊरू**) दोनों जांघें हैं (**कःउ**) किसने ही (**तत्**) उनको (**जजान्**) उत्पन्न किया (**याभ्याम्**) जिन दोनों के साथ (**कुसिन्धं**) चिपचिपा धड़ (**सुदृढ़म्**) बड़ा मजबूत (**बभूव**) हुआ है।

कः सप्त खानि वि ततर्द शीर्षणि कर्णाविमौ नासिके चक्षणी मुखम्।

येषां पुरुत्रा विजस्य मह्मनि चतुष्पादो द्विपदो यन्ति यामम्।। अथर्व १०.२.६

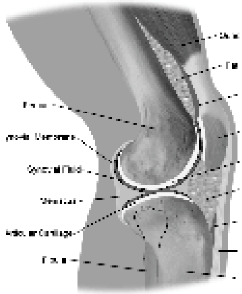

(**कः**)कर्त्ता परमेश्वर ने (**शीर्षणि**) मनुष्य के मस्तक में (**सप्त**) सात (**खानि**) गोलक (**विततर्द**) खोदे (**इमौकर्णौ**) यह दोनों कान (**नासिके**) दोनों नथने (**चक्षणी**) दोनों आखें और (**मुखम्**) एक मुख (**येषाम्**) जिनके (**विजयस्य**) विजय की (**मह्मनि**) महिमा के (**चतुष्पादः**) चौपाये और (**द्विपदः**) दोपाये जीव (**पुरुत्राः**) अनेक प्रकार से (**यामम्**) मार्ग (**यन्ति**) चलते हैं।
शरीर की बनावट की तरह ही इसकी कार्य प्रणाली भी वेदों में हैं।

को अस्मिन्नापो व्यदधाद्विषूवृतः पुरूवृतः सिन्धुसृत्याय जाताः।

तीव्रा अरूणा लोहिनीस्ताम्रधूम्रा ऊर्ध्वा अवाचीः पुरुषे तिरश्चीः।। अथर्व १०.२.११

(**कः**) प्रजापति परमेश्वर ने (**अस्मिन् पुरुषे**) इस मनुष्य में (**विषुवृत्तः**) नाना पकार के घूमने वाले (**पुरुवृतः**) बहुत घूमने वाले (**सिन्धु सृत्याया**) समुद्र के समान बहने के लिए (**जाताः**) उत्पन्न किये (**तीव्राः**) तीव्र (**अरूणाः**) बैंगनी (**लोहिनीः**) लाल वर्ण वाले (**ताम्र धूम्राः**) तांबे के समान धूएँ से वर्ण वाले (**ऊर्ध्वाः**) ऊपर जाने वाले (**अवाचीः**) नीचे की ओर चलने वाले और (**तिरश्चीः**) तिरछे बहने वाले (**आपः**) रुधिर धाराओं को (**विअदधात्**) बनाया है।
विवाह के लिए भी स्त्री-पुरुष की आयु वैज्ञानिक आधार पर तय की गई हैं। कुमारी का विवाह तब होना चाहिए जब-

नीललोहितं भवित कृत्यासक्तिर्व्यज्यते। एधन्ते अस्या ज्ञातयः पतिर्बन्धेषु बध्यते।। ऋ.१०.८५.२८

जब कुमारी को मासिक धर्म होता है। गृहस्थ जीवन में आसक्ति होने लगे। इसके कुटुम्ब के बढ़ने का भाव प्रकट हो तब उसका पति सांसारिक बन्धन में बँधता है। स्त्री पुरुष जब सब अंगों से हृष्ट-पुष्ट व नीरोग हों तभी गर्भाधान हो।

पुंसि वै रेतो भवति तत्स्त्रियामनु षिच्यते। तद्वै पुत्रस्य वेदनं तत्प्रजापतिरब्रवीत।। अथर्व ६.११.२

रक्षा स्वभाव पुरुष में ही वीर्य होता है, यह वीर्य स्त्री में अनुकूल विधि से सींचा जाता है। वह कर्म ही कुल शोधक सन्तान की प्राप्ति का कारण है। ऐसा प्रजापति परमेश्वर ने बतलाया है। अगले मंत्र में ही बतलाया गया है कि कब पुत्र और कब पुत्री का जन्म होता हैं। वह भी विज्ञान के अनुकूल है।
अथर्ववेद कांड१ सूक्त११ में प्रसूति विज्ञान का विस्तृत वर्णन है।

नेव मांसे न पीवसि नेव मज्जस्वाहतम्। अवैतु पुश्नि शेवलं शुने जराय्वत्तवेव जरायु पद्यताम्। अथर्व १.११.४

भावार्थ - जरायु एक झिल्ली होती है जिसे जेली कहते हैं। बालक गर्भ के भीतर जेली में लिपटा रहता है। कुछ उसमें से बालक उत्पन्न होने पर नाभि आदि के बन्धन से छूट जाती है और सार रहित होकर माता के उदर में ऐसे फिरती है जैसे-सेवार नामक घास जलाशय में। शरीर में उसके रह जाने से रोग हो जाता है। इससे जरायु का उदर से निकल जाना आवश्यक है।
अब हम कुछ शल्य चिकित्सा पर वेद मत का वर्णन करते हैं-

यत्ते रिष्टं यत्ते द्युत्तमस्ति पेष्ट्रं ते आत्मनि।

धाता तद्भद्रया पुनः सं दधत्पुरुषा परूः।। अथर्व ४.१२.२

भावार्थ- (**यत्**) जो कुछ (**ते**) तेरा (**रिष्टम**) टूटा हुआ और (**यत्**) जो (**ते**) तेरा (**द्युत्तम**) जलता हुआ और जो(**ते**) तेरे (**आत्मनि**) शरीर में (**पेष्ट्रम**) पिसा हुआ (**अस्ति**) है। (**धाता**) पोषण करने वाला वैद्य (**भद्रया**) कल्याण करने वाली क्रिया से (**तत् परुः**) उस जोड़ को (**परुषा**) दूसरे जोड़ से (**पुनः**) फिर (**संदधत्**) संधि कर देवे।

सं ते मज्जा मज्ज्ञा भवतु समु ते परुषा परुः।

सं ते मांसस्य विस्रस्तं समस्थ्यपि रोहतु ।। अथर्व ४.१२.३

भावार्थ- (**ते**) तेरे (**मज्जा**) हाड़ की मींग (**मज्जा**) हाड़ की मींग से (**संभवतु**) मिल जावे (**उ**) और (**तेपरुः**) तेरा जोड़ (**परुषा**) जोड़ से (**समू**) मिल जावे। (**ते**) तेरे (मांसस्य) मांस का (**विस्रस्तम्**) हटा हुआ अंश (**संरोहतु**) जुड़ जावे और (**अस्थि**) हाड़ (**अपि**) भी (**संरोहतु**) जुड़ कर ठीक हो जावें।

लोम लोम्ना सं कल्पया त्वचा सं कल्पया त्वचम्। असृक्ते अस्थि रोहतु च्छिन्नं सं धेह्योषधे।। अथर्व ४.१२.५

भावार्थ- (**औषधे**) हे तापनाशक औषधि के समान मनुष्य (**लोम**) रोम को (**लोम्ना**) रोम के साथ (**संकल्पय**) जमा दे (**त्वचम्**) त्वचा को (**त्वचा**) त्वचा के साथ (**संकल्पय**) जोड़ दे (**ते**) तेरा (**असृक्**) रुधिर और (**अस्थि**) हाड़ (**रोहतु**) उगे (**छन्नम्**) टूटा हुआ अंग भी (**संधेहि**) अच्छे प्रकार मिला दें।

यदि कर्तं पतित्वा संशश्रे यदि वाश्मा प्रहृतो जघान। ऋभू रथस्येवांगानि सं दधत्परुषा परुः।। अथर्व ४.१२.७

(**यदि**) यदि (**कर्त्तम्**) कटारी आदि हथियार ने (**पतित्वा**) गिरकर (**संशश्रे**) काट दिया है, (**यदि वा**) अथवा (**प्रहृतः**) फेंके हुए (**अश्मा**) पत्थर ने (**जघान**) चोट लगाई है। (**ऋभुः**) बुद्धिमान पुरुष (**रथस्य अंगानि इव**) रथ के अंगों के समान (**परुः**) एक जोड़ को (**परुषा**) दूसरे जोड़ से(**संदधत्**) मिला देवे।

घाव से यदि रक्त अधिक बह रहा हो तो अथर्ववेद में उसे रोकने का वर्णन है।

अमूर्या यन्ति योषितो हिरा लोहितवाससः। अभ्रातर इव जामयस्तिष्ठन्तु हतवर्चसः।। अथर्व १.१७.१

(**अमूः**) वे (**याः**) जो (**योषितः**) सेवा करने वाली (**लोहितवास सः**) रक्त से ढकी हुई (**हिरः**) नाड़ियाँ (**यन्ति**) चलती हैं वे(**अभ्रातरः**) बिना भाईयों की (**जामयः इव**) बहिनों के समान (**हतवर्चस**) निस्तेज होकर (**तिष्ठन्तु**) ठहर जावे।

तिष्ठावरे तिष्ठ पर उत त्वं तिष्ठ मध्यमे। कनिष्ठिका च तिष्ठति तिष्ठादिद्धमनिर्मही।। अथर्व १.१७.२

हे (**अवरे**) नीचे की नाड़ी (**तिष्ठ**) तू ठहर (**परे**) हे ऊपर वाली (**तिष्ठ**) तू ठहर (**उत**) और (**मध्यमे**) हे बीच वाली (**त्वम्**) तू (**तिष्ठ**) ठहर (**च**) और (**कनिष्ठिका**) अति छोटी नाड़ी (**तिष्ठति**) ठहरती हैं (**मही**) बड़ी (**धमनीः**) नाड़ी(**इत्**) भी (**तिष्ठात्**) ठहर जावे। नाड़ी बन्धन के बाद टूटे हुए भाग को जोड़ कर पुनः रक्त भ्रमण शुरू करे। इसके उपरांत घाव पर पट्टी बाँध देवे।

परि वः सिकतावती धनूर्बृहत्य क्रमीत्। तिष्ठतेलयता सु कम्।। अथर्व १.१७.४

(**सिकतावती**) सेचन स्वभाव (कोमल रखने वाली) बालू आदि से भरी हुई (**बृहती**) बड़ी (**धनूः**) पट्टी में (**वः**) तुम नाड़ियों को(**परिअक्रमीत्**) लपेट लिया है। (**तिष्ठत**) ठहर जाओ (**सु**) अच्छे प्रकार (**कम्**) सुख से(**इलयत**) चलो। **क्रमशः........**

ऐलोवेरा एक लाभ अनेक

स्वास्थ्य

ऐलोवेरा को घृत कुमारी, क्वारगंदल, या ग्वारपाठा के नाम से भी जाना जाता है। यह एक औषधीय पौधे के रूप में विख्यात् है जिसका उल्लेख आयुर्वेद के प्राचीन ग्रंथों मे भी मिलता है। ऐलोवेरा के अर्क का प्रयोग बड़े स्तर पर कई सौन्दर्य प्रसाधनों में भी किया जाता है। बवासीर, डायबिटीज, गर्भाशय के रोग, पेट की खराबी, जोड़ों का दर्द, त्वचा की खराबी, मुँहासे, रूखी त्वचा, सन-बर्न, झुर्रियों, दाग-धब्बों, आँखों के काले घेरों, फटी एड़ियों के लिए यह लाभप्रद है। इसके अलावा ऐलोवेरा, मधुमेह के इलाज में काफी उपयोगी है। ऐलोवेरा जूस पीने से शरीर की हर बीमारी दूर हो जाती है इसलिये इसे रोज पीना चाहिये। चलिये जानते हैं ऐलोवेरा जूस का हमारे स्वास्थ्य पर कितना अच्छा प्रभाव पड़ता है-

ये है एलोवेरा जूस के उपयोग-

१. करे अंदर से सफाई- हमारे शरीर में भोजन तथा प्रदूषण की वजह से बहुत सारी गंदगी अंदर जाती है। शरीर अच्छे से काम करे इसलिये हमें गंदगी से शरीर को मुक्ति दिलानी चाहिये। ३ से ४ चम्मच रस सुबह खाली पेट लेने से दिन-भर शरीर में चुस्ती व स्फूर्ति बनी रहती है। साथ ही यह शरीर के अंदर की गंदगी को बाहर निकाल देता है। एलोवेरा का ज्यूस ब्लड को प्यूरीफाई करता है साथ ही हीमोग्लोबिन की कमी को पूरा करता है। शरीर में व्हाईट ब्लड सेल्स की संख्या को बढ़ाता है।

२. एजिंग से बचाए- ऐलोवेरा का जूस शरीर में प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ाता है। इसमें खूब सारा एंटी आक्सीडेण्ट पाया जाता है, जो बूढ़ा करने वाले फ्री रेडिकल्स को दूर करके इंसान को बुढ़ापे से बचाता है। जलने पर, अंग कहीं से कटने पर, अंदरूनी चोटों पर एलोवेरा अपने एंटी बैक्टेरिया और एंटी फंगल गुण के कारण घाव को जल्दी भरता है।

३. पाचन क्रिया सही करे- ऐलोवेरा ज्यूस पीने से पेट के कई रोग दूर होते हैं। यह पाचन तंत्रिका को मजबूत बनाता है जिससे कि वह पेट में जाने वाले आहारों से पौष्टिक तत्वों को ग्रहण कर सके। इसके रोजाना उपयोग से अपच और कब्ज जैसी समस्या भी दूर रहती है। पेट में पैदा होने वाले अल्सर को भी यह ठीक करता है।

४. दिल की बीमारी और खून का दौरा- यह शरीर में खून बढ़ाने के साथ ही खून का दौरा भी ठीक करता है। साथ ही यह शरीर में हाई ब्लड प्रेशर को सामान्य करता है, जिससे हार्ट अटैक की समस्या नहीं आ पाती है।

अन्य लाभ -

१. इसके रस में कई तरह के मिनरल, विटामिन और अमीनोएसिड होते हैं, जैसे बी१२, बी६, बी२, बी१, फोलिक एसिड, नियासिन, जिंक और मैगनीशियम आदि। इतने सारे पौष्टिक तत्वों के मिश्रण का उपयोग कर के शरीर के हर रोग दूर हो जाते हैं।

२. यह शरीर से विषैले पदार्थों को बाहर निकालकर शरीर की अंदर से सफाई करता है। जिससे त्वचा में चमक आती है तथा दाग-धब्बों की छुट्टी होती है। इसके अलावा एक्जिमा, पिंपल और सिरोसिस की समस्या दूर होती है।

३. मुँह के रोग दूर होते हैं। मसूड़ों की तकलीफ और खून आना बंद होता है। साथ ही मुँह में अल्सर की बीमारी भी ठीक होती है। ऐलोवेरा जूस पीने से मोटापा भी कंट्रोल होता है और एनर्जी भी आती है।

सच बराबर तप नहीं

कहावत मशहूर है-

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जिसके मन में साँच है, उसके मन में 'आप'॥

सच की तुलना परमात्मा से की जाती है। जिस तरह परमात्मा को प्राप्त करने के लिए योगी, मुनि, ज्ञानी, ध्यानी तथा संत लोग तप करते हैं उसी तरह सच बोलना या सच पर कायम रहना भी किसी कड़े तप से कम नहीं। आखिर सच कहते किसे हैं? जो जैसा हो, स्पष्ट, सुन्दर, सुदर्शन अनुकरणीय, पूजनीय, स्थायी तथा प्रिय हो, उसे सच या सत्य करते हैं। सच बोलने वाले व्यक्ति की सभी कद्र, विश्वास तथा इज़्ज़त करते हैं। सच पर कायम रहने वाले व्यक्ति का मन शांत, स्थिर तथा परमात्मा के नज़दीक रहता है। क्योंकि सच तो एक ही होता है अतः इसे याद रखने के लिए दिमाग पर ज्यादा बोझ नहीं डालना पड़ता। कोर्ट कचहरियों में 'सत्यमेव जयते' लिखा होता है क्योंकि कोई भी आदमी सच के बदले में झूठ बोलकर धन, सम्पदा, हैसियत या सरकारी कुर्सी पा ले लेकिन जीत तो आखिर सच की ही होती है। क्योंकि परमात्मा सच को देखता है, जानता और समय आने पर उसे पुरस्कृत भी करता है। झूठा आदमी हर वक्त डरता तथा घबराता रहता है, रात को नींद भी नहीं आती। झूठ का पर्दाफाश होने के डर के कारण वह रात को सोया हुआ भी उठ-उठ बैठता है उसका मानसिक संतुलन कई बार बिगड़ जाता है। सच बोलने वाले व्यक्ति का सभी विश्वास करते हैं जबकि झूठे का कोई भरोसा नहीं करता। इसके विपरीत सच बोलने वाला आदमी सदा चैन की नींद ही सोता है। हाँ, बहुत बार सच बोलने वाले को अपने से ज्यादा ताकतवर के मुकाबले में धन, मान, परिवार आदि के नुकसान का डर जरूर होता है। लेकिन सच बोलने वाले व्यक्ति हर हाल में सच का ही साथ देते हैं। झूठ बोलने से एक बार तो काम हो सकता है लेकिन हमेशा नहीं। आज अधिकांश कार्यालयों में भ्रष्टाचार का ही बोलबाला है लेकिन यह दुनिया आज भी सच का दामन थामने वालों के ही सिर पर टिकी हुई है। राजा हरिश्चन्द्र को आज भी ज़माना उनके सच के कारण ही आदरपूर्वक याद करता है। ज्येष्ठ पांडव पुत्र धर्मराज युधिष्ठर को उनके विरोधी भी उनके सच बोलने के कारण इज़्ज़त करते थे।

महाभारत की लड़ाई चल रही थी। कौरवों का पलड़ा भारी था। श्रीकृष्ण ने कहा जब तक गुरु द्रोणाचार्य जीवित हैं तब तक युद्ध जीता नहीं जा सकता। गुरु द्रोणाचार्य को अपने पुत्र अश्वत्थामा से बहुत प्रेम था। श्रीकृष्ण ने कहा कि अगर युधिष्ठर यह कह दें कि अश्वत्थामा की मृत्यु हो गई है तो गुरु द्रोणाचार्य को आसानी से पराजित किया या मारा जा सकता है। लेकिन युधिष्ठर ने झूठ बोलने से साफ मना कर दिया। बाद में अश्वत्थामा नाम के हाथी को मार दिया गया और युधिष्ठर से कहलवा दिया गया कि अश्वत्थामा नाम का नर अथवा हाथी मारा गया है। इससे पहले कि हाथी का ज़िकर आता, ढोल और नगाड़े बजा दिये गये। और हाथी का नाम शोर के कारण सुना ही नहीं गया। इस तरह युधिष्ठर से जो झूठ बुलवाया गया उसका उन्हें जीवन पर्यन्त अफसोस रहा। आम तौर पर लोग समय, स्थान तथा परिस्थिति के मुताबिक ही सच या झूठ बोलने का चुनाव करते हैं, जो कि गलत है। अगर सच्चा तपस्वी बनना है तो हर समय, स्थान तथा परिस्थिति में सच बोलना चाहिए। सच बोलने वाले आदमी की गवाही के आधार पर ही न्यायाधीश दोषी को सजा देता है तथा बेकसूर को बाइज्जत छोड़ता है लेकिन झूठी गवाही देने वाले की आत्मा उसे कभी न कभी कचोटती जरूर है। सच्चा आदमी जीवन में एक बार मरता है जबकि झूठा व्यक्ति बार-बार मरने का कष्ट भोगता है। इसी संदर्भ में कबीर ने कहा हैः- साँचे शाप न लागई, साँचे काल न खाया, साँचे को साँची मिले, साँची माँहि समाया।'' अतः आदमी को सच बोलना ही नहीं बल्कि इस पर कायम भी रहना चाहिए। आदमी सच बोलकर चैन से मर सकता है, झूठ बोलकर नहीं। तभी तो मरने वाले की अर्थी के पीछे बोल रहे होते हैः- राम नाम सत्य है।

- प्रो. शामलाल कौशल

न्यास द्वारा समस्त संस्कारों हेतु समुचित व्यवस्था

जीवन में उदात्त नैतिक मूल्य स्वयमेव स्थापित नहीं होते, भागीरथ प्रयत्न करना होता है। भारतीय मनीषा ने इस हेतु १६ संस्कारों का विधान किया है। जो प्रत्येक गृहस्थ को करवाने चाहिए। कई सज्जनों को लगता है कि यह कठिन तथा व्यय-साध्य कार्य है। हमारा निवेदन है कि ऐसा कुछ नहीं है। संस्कार चित्त-प्रसाद-अभिवृद्धि का हेतु है। आप केवल दूरभाष पर अपनी अभिलाषा बतावें। न्यास के पुरोहित पंडित नवनीत आर्य सारा कार्य, स्वतः व्यवस्था कर सुन्दरता से सम्पन्न करायेंगे।

दूरभाष : ०२६४-२४१७६६४, चलभाष ०९३१४५३५३७९

कृपया न्यास की वेबसाईट : www.satyarthprakashnyas.org पर अवश्य देखें

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।

०९३१४५३५३७९

प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।

सूचना तकनीक के नवाचार और हिन्दी भाषा-साहित्य....2

इसी के साथ फ्रीडमैन ने जो दूसरी बात कही, अब थोड़ी सी चर्चा उसकी भी कर ली जाए। उन्होंने कहा कि वर्ड वाइड वेव (WWW) और इण्टरनेट के कारण आपके इस कण्टेण्ट को तत्क्षण पूरी दुनिया में कहीं भी ले जाया जाना या भेज पाना संभव हो गया है और वह भी लगभग निःशुल्क । मैं आपका ध्यान इसी बात की तरफ दिलाना चाहता हूँ कि आपके कम्प्यूटर पर जो भी रचा या लिखा जाता है, उसे आप इण्टरनेट के जरिए पूरी दुनिया में कहीं भी भेज सकते हैं, तुरन्त और करीब करीब निःशुल्क । आप अपने घर में बैठे एक कहानी लिखें और कुछ क्षणों के अन्तराल में आपकी वह कहानी सात समुन्दर पार बैठा काई पढ़े- इस चमत्कार को नमस्कार करना चाहता हूँ। यह आज इतना आम हो चला है कि हमें इस पर जरा भी अचरज नहीं होता है कि यह हिन्दी में उतना ही संभव है जितना अंग्रेजी या किसी अन्य भाषा में।

सारी बात का सार यह है कि सूचना प्रौद्योगिकी के जो दरवाजे हिन्दी के लिए बन्द थे, वे अब खुल चुके हैं और उनमें बहुत तेजी से आवागामन हो रहा है। जरूरत इस बात की है कि हम इस सुविधा का अधिक से अधिक लाभ लें।

अब मैं आपको भाषा से साहित्य की ओर लाना चाहता हूँ। हिन्दी साहित्य के संदर्भ में नई सूचना प्रौद्योगिकी के बारे में कुछ बात करेंगे। क्या तकनीक और साहित्य में कोई रिश्ता होता है? हो सकता है और होना चाहिए। हिन्दी साहित्य का इस तकनीक से कैसा रिश्ता है?अगर यह रिश्ता थोड़ा और करीबी बने तो क्या इससे साहित्य का, उससे जुड़े लोगों का, जिनमें पाठक भी शामिल हैं, कुछ भला हो सकता है?क्या तकनीक साहित्य के लिए हानिप्रद है?ऐसे ही कुछ मुद्दों की चर्चा हम करेंगे। लेकिन, इससे पहले जरा आज की हिन्दी पुस्तकों के परिदृश्य की चर्चा कर ली जाए।

जो भी लोग हिन्दी में कुछ लिखते हैं,उनकी सबसे बड़ी शिकायत आज यह होती है कि किताब छपती नहीं है। आप पाण्डुलिपि लेकर प्रकाशक के चक्कर लगाते रहिए, वह आपकी किताब छापने में कोई रुचि नहीं लेता। अगर जैसे तैसे करके किताब छप भी जाए तो वह बिकती नहीं और प्रकाशक किसी तरह उसे बेच भी ले(जो कि वह कर ही लेता है), तो किताब पढ़ी नहीं जाती। हिन्दी की किताब का दूसरा संस्करण निकलेगा, यह तो उम्मीद ही छोड़ दीजिए। बहुत सारी पुरानी किताबें अब अलभ्य हैं, क्योंकि उनका पुनर्मुद्रण नहीं हुआ। आज हिन्दी में एक किताब का संस्करण ११०० से घटते घटते ३००-४०० पर आ टिका है। हिन्दी पट्टी में पुस्तकालय संस्कृति भी विकसित नहीं हो पाई है। यह तो हुई एक तरफ की बात। अगर आप प्रकाशक से बात करें तो उसके अपने कष्ट भी कम नहीं हैं। वह बतायेगा कि किताब छापना बड़े जोखिम और घाटे का सौदा है। पहले उसे अपना पैसा फँसाना पड़ता है, किताब बिकती नहीं, जैसे तैसे करके बेची जाती है, उसमें भी सौ झंझट हैं, इसे कमीशन खिलाओ-उसे खुश करो, बिल पास होने का इंतजार करो आदि।

रोना पाठक का भी कम नहीं है-किताब मिलती नहीं है, बड़े से बड़े शहर में किताब की दुकान नहीं है, किताब बहुत महंगी है, मनचाही किताब मिलती ही नहीं है, नई किताबों के बारे में जानकारी के तमाम स्रोत सूख चुके हैं वगैरह। तो फिर जो लिख रहा है वह क्या करे, और जो पढ़ना चाहता है वह क्या करे?

मुझे इनमें से बहुत सारी दिक्कतों का हल नई सूचना प्रौद्योगिकी में नजर आता है। अगर कोई अपने लिखे को इण्टरनेट पर डाल देता है, तो कम से कम वह उस समुदाय तक तो पहुँच जाता है जिसकी पहुँच इण्टरनेट तक है। यह समाज भी छोटा नहीं है और लगातार बड़ा होता जा रहा है। मेरे पास इस वक्त दिसम्बर ०५ के आँकड़े हैं जिनके अनुसार भारत में छह करोड़ इण्टरनेट उपभोक्ता थे। कहना अनावश्यक है कि यह संख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है। मेरे पास प्रमाणिक आँकड़े तो नहीं हैं लेकिन माना जा सकता है कि अब १० करोड़ से अधिक इण्टरनेट उपभोक्ता हमारे देश में होंगे । अब जरा सोचिए, अगर इतने लोगों तक आपका लिखा पहुँचता है तो यह कितनी उत्तेजक बात होगी। इस दृष्टि से थोड़ा इण्टरनेट पर हिन्दी के परिदृश्य की भी चर्चा कर ली जाए। बिना खरीदे और कहीं भी रहते हुए इन पत्रिकाओं को पढ़ सकते हैं । यहाँ मैंने स्वयं को

साहित्य पत्रिकाओं तक सीमित रखा है अन्यथा धर्म, अध्यात्म, खेल, ज्योतिष, समाचार, स्वास्थ्य, राजनीति आदि की अनेक हिन्दी पत्रिकाएँ नेट पर हैं।

इण्टरनेट पत्रिकाएँ : इन्हीं के साथ ऐसी भी अनेक साहित्यिक **पत्रिकाएँ** हैं जो मुद्रित नहीं होती, केवल इण्टरनेट पर ही निकलती हैं जैसे अभिव्यक्ति, अनुभूमि, हिन्दी नेस्ट, वेब दुनिया, साहित्य कुंज, कलायन, शब्दांजलि, कृत्या, छाया, सृजनगाथा, निरन्तर, रचनाकार, लेखनी, गर्भनाल, इन्द्रधनुष इण्डिया, हिन्दी तहलका आदि। इनमें हिन्दी के तमाम बड़े रचनाकार प्रकाशित होते हैं।

हिन्दी समाचारों की दुनिया - हिन्दी के लगभग सभी बड़े अखबार अपने नेट संस्करण निकाल रहे हैं- अमर उजाला, जागरण, आज, नई दुनिया, राजस्थान पत्रिका, नवभारत टाइम्स, दैनिक भास्कर, पंजाब केसरी, दैनिक नवज्योति, हिन्दुस्तान, प्रभात खबर इनमें से कुछ हैं।। महत्वपूर्ण बात यह है कि जहाँ अपने घर पर आने वाले अखबार में आपको नई खबर पढ़ने के लिए अगली सुबह तक इंतजार करना पडता है, अखबार का नेट संस्करण आपको हर वक्त ताजा खबर सुलभ कराता है। इन सारे अखबारों की वैचारिक और साहित्यिक सामग्री भी इण्टरनेट पर सुलभ रहती है।

अखबारों के साथ ही प्रमुख समाचार एजेन्सियाँ भी इण्टरनेट पर अपनी सामग्री सुलभ कराती हैं। अखबार ही क्यों, दुनिया के वे लगभग सारे रेडियो स्टेशन भी जो हिन्दी में प्रसारण करते हैं, इण्टरनेट पर अपनी हिन्दी सामग्री के साथ मौजूद हैं जैसे बीबीसी, वॉयस ऑफ अमरीका, डायचे वेले आदि। कहना अनावश्यक है कि यहाँ साहित्यिक सामग्री खूब मिल जाती है। बीबीसी हिन्दी सेवा की साइट हर लिहाज से विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

हिन्दी रचनाशीलता - उक्त के अतिरिक्त भी ऐसे बहुत सारे स्थल हैं जहाँ आपको हिन्दी की साहित्यक रचनाएँ असानी से मिल जाती हैं। उदाहरणार्थ काव्यालय, कविता कोश और गीत मंजूषा जैसे ठिकानों को लें। यहाँ आप हिन्दी के आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक की सारी कविताएँ पढ़ सकते हैं। काव्यालय में बाकायदा अलग अलग खण्ड बने हुए हैं। 'शिलाधार' में २०वीं शताब्दी से पहले की हिन्दी कविताएँ हैं तो युगवाणी काव्य सेतु में अनूदित कविताएँ । इसी तरह काव्यकोश में वर्णमाला क्रम में कवियों की रचनाएँ सग्रहित हैं, गीत मंजूषा में लोकप्रिय गीत हैं, ये सारे संकलन सतत् अद्यतन होते रहते हैं। इसी तरह कहानियों, लेखों, ललित निबन्धों, विचारों, सूक्तियों, हाइकू, के ठिकाने नेट पर हैं। ऐसे ही उर्दू साहित्य आदि के स्थल भी हैं। अनेक प्रशंसकों ने अपने प्रिय रचनाकारों की चुनिन्दा रचनाएँ या अपनी प्रिय पुस्तक ही इण्टरनेट पर डाल रखी है। आप पूरी रामचरित मानस, दोहावली, गीतावली, रहीम के दोहे, सूर के पद, कामायनी, मधुशाला और न जाने क्या क्या पा सकते हैं। इन्हीं के साथ साथ अनेक नए और उभरते हुए रचनाकार भी इस माध्यम का प्रयोग अपनी रचनाओं के प्रचार प्रसार के लिए कर रहे हैं। अनेक कवियों और रचनाकारों ने अपने स्वतंत्र ठिकाने भी बना लिए हैं जहाँ आप उनकी रचनाशीलता का परिचय पा सकते हैं जैसे अशोक चक्रधर या गुलजार । कुछ लोगों ने परोपकार के लिहाज से भी ऐसा किया है । ऐसे लोगों में से एक हैं इटली के सुनील दीपक, जिन्होंने अपनी साइट कल्पना पर हिन्दी के बहुत सारे रचनाकारों को जगह दी है। ओमप्रकाश दीपक, अर्चना वर्मा, ओम थानवी जैसे लोगों का लिखा बहुत कुछ आप कल्पना पर पढ़ सकते हैं। मेरा भी थोड़ा सा लेखन वहाँ है। यहीं यह जोर देकर कहना चाहूँगा कि श्री सुनील दीपक ने यह काम पूरी तरह निःशुल्क किया है। लेकिन क्या आपको यह बात कम महत्वपूर्ण लगती है कि आप कहीं से भी ओम थानवी की वे तमाम टिप्पणियाँ पढ़ सकते हैं जो उन्होंने जनसत्ता में समय समय पर लिखे हैं। आपके शहर, कस्बे, गाँव में जनसत्ता भले ही न मिले, आप ओमजी का लिखा कल्पना के माध्यम से पढ़ सकते हैं।

इधर एक नई चीज और आई है। अंग्रेजी में इसे ब्लॉग और हिन्दी में चिट्ठा कहा जाता है। अब तक मैंने जिन चीजों की चर्चा की, उनमें से ज्यादातर में पैसा लगता है और किसी सम्पादक की स्वीकृति होती है। आप किसी पत्रिका को रचना भेजें तो वह तभी प्रकाशित होगी जब सम्पादक को पसन्द आएगी। ब्लॉग में ये सब झंझट भी खत्म कर दिए। आप जो लिखें, जैसा लिखें, उसे खुद ही प्रकाशित कर लें, यह है ब्लॉग। ब्लॉग वैसे तो एक निजी डायरी की मानिन्द है। जब यह निजी है तो फिर आपकी आजादी है कि आप इसमें क्या करते हैं। आप अपनी कविता, किसी की कविता पर अपनी प्रतिक्रिया, कोई तस्वीर, कोई गाना, कोई लतीफा, कुछ भी डालें। ब्लॉग की संख्या बहुत तेजी बढ़ी है। इस वक्त हिन्दी में कम से कम ३००० ब्लॉग्ज

हैं। न केवल नौसीखिये, बल्कि बहुत जाने माने रचनाकार जैसे उदय प्रकाश, विष्णु नागर, बोधिसत्व वगैरह ने भी अपने ब्लॉग बना लिए हैं और वे उन पर काफी कुछ कहते रहते हैं। साहित्य से इतर अमिताभ बच्चन, आमिर खान वगैरह के ब्लॉग्ज के बारे में तो आप सुनते ही रहते हैं। ब्लॉग्ज की दुनिया में अराजकता भी कम नहीं है। गाली-गलौज भी होती है, बदमजगी भी पैदा होती है, लेकिन यही तो प्रजातन्त्र हैं। मुझे तो रचनाशीलता का सही प्रजातंत्र नजर आता है ब्लॉग्ज की इस दुनिया में। ब्लॉग्ज की दुनिया में क्या हो रहा है। इसकी सूचना के लिए अनेक संकलक, जिन्हें एग्रीगेटर्स कहा जाता है आ गए हैं, जैसे ब्लॉगवाणी, चिट्ठाजगत्, नारद आदि। इनके माध्यम से आपको ब्लॉग जगत की सारी हलचलों का पता लग जाता है। अगर आपको किसी का ब्लॉग पसन्द है तो आप उसका फीड सब्सक्राइब कर सकते हैं। उस स्थिति में जैसे ही उस ब्लॉग पर नया कुछ होगा, आपको तुरन्त सूचना मिल जायेगी।

तो इतना कुछ हो रहा है इण्टरनेट की दुनिया में, जिसका सम्बन्ध हिन्दी और उसके साहित्य से है। लेकिन लेखकों के एक बड़े वर्ग के मन में इस सबको लेकर अनेक संशय हैं और इनमें से अधिकांश की इस सबसे दूरी बनी हुई है। आगे बढ़ने से पहले एक बात स्पष्ट कर दूँ, मेरा यह स्पष्ट मत है कि न तो तकनीक का परिचय या उस पर महारत आपकी महानता का आधार है और न उसका अभाव किसी तरह भी आपको छोटा सिद्ध करता है। किसी को तकनीक में दक्षता हासिल है, तो बस है और किसी को उसमें दिलचस्पी नहीं है, तो नहीं है, बस इतना ही है, इससे अधिक नहीं। लेकिन इसके बावजूद हम तकनीक के पक्ष विपक्ष में बात जरूर कर सकते हैं, करना भी चाहिए। हिन्दी में अक्सर दो तीन बातें इस तकनीक को लेकर की जाती हैं। पहली तो यही कि कम्प्यूटर किताब या शब्द का विकल्प नहीं है। मैं भी इससे शत प्रतिशत सहमत हूँ। हाथ में किताब लेकर पढ़ने का जो सुख है, वह भला कम्पयूटर के स्क्रीन पर पढ़ने में कहाँ है?लेकिन, मैं तो कम्प्यूटर को किताब का विकल्प नहीं, उसका प्रसार कहना चाहता हूँ। अगर आपको किताब न मिले, जो रचना आप पढ़ना चाह रहे हैं, वह मुद्रित रूप में न मिले तो क्यों न उसे कम्पयूटर पर पढ़ लें या कम्पयूटर से उसका प्रिन्ट आउट ले लें?

रही बात लिखने की, तो कुछ मित्रों का कहना है कि हाथ में कलम लेकर लिखने का जो सुख है, और कालम जो रचनाशीलता प्रवाहित होती है, वह बात की बोर्ड में नहीं आ सकती। हो सकता है ऐसा उनका अनुभव हो। यह हो सकता है कि जो ऐसा कहते हैं, उन्होंने की बोर्ड को स्पर्श ही नहीं किया हो। वे न करना चाहें, यह उनकी आजादी है, और हमें उस आजादी का पूरा पूरा सम्मान करना चाहिए। लेकिन अगर कोई कम्पयूटर पर लिखने में सहज महसूस करता है तो वह भी आपकी आलोचना का पात्र क्यों?और अगर कोई कागज पर कलम से लिखी हुई अपनी रचना को बजरिये कम्प्यूटर इण्टरनेट पर रखे तो इसमें क्या आपत्ति है?

एक और बात डिजिटल डिवाइस की की जाती है। दुनिया दो हिस्सों में बँटी है। वे जो डिजिटल तकनीक में सक्षम हैं और वे जो इसमें सक्षम नहीं हैं,और यह खाई बहुत गहरी है। बिल्कुल ठीक बात है। मेरा सवाल है, वह खाई पटेगी कैसे, जो सक्षम नहीं है, उनके सक्षम होने से ही तो खाई पटेगी। मनुष्य ताड़ पत्र से छापाखाने तक आया है। सब कुछ वैसा ही नही है जैसा हजार पाँच हजार बरस पहले था,तो फिर मुद्रित शब्द से आगे डिजिटाइजेशन में क्यों आपत्ति हो?लेकिन, फिर जोर देकर कहूँ कि कोई भी तकनीक मनुष्य का विकल्प नहीं हो सकती। उसे बनने भी नहीं देना चाहिए। मुझे लगता है कि हमारे हिन्दी साहित्य के प्रचार प्रसार में और जो बाधाएँ हम अब तक महसूस करते रहे हैं, उनके निवारण में यह नई सूचना प्रौद्योगिकी बहुत सहायक सिद्ध हो रही है और हो सकती है। इसलिए मैं इसका स्वागत करना चाहता हूँ।

-डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल

❑❑❑

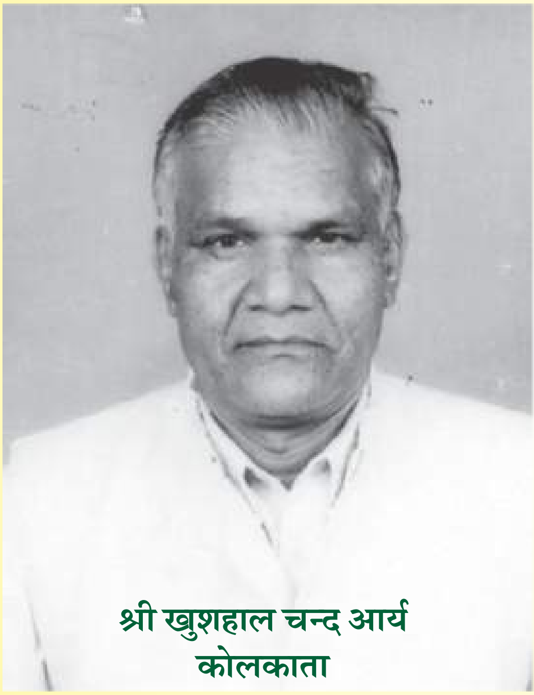

श्री खुशहाल चन्द आर्य
कोलकाता

श्री खुशहाल चन्द जी आर्य एक सहृदय आर्य पुरुष हैं। स्वाध्यायशील चिन्तक व लेखक के रूप में आपने अपनी पहचान स्थापित की है। आर्य जगत् की अनेक पत्रिकाओं में आपके लेख प्रकाशित होते रहते हैं। 'गोविन्द राम एंड संस' के नाम से आप कोलकाता में व्यवसाय करते हैं। जो आत्मा में सत्य है तदनुरूप आचरण करने का भी प्रयास करते हैं। न्यास के कार्यों के विस्तार हेतु स्वयं तो सहयोग भावना से ओतप्रोत रहते ही हैं अन्यों को भी प्रेरित करते हैं। आशा ही नहीं विश्वास है कि आपका और अधिक सहयोग व स्नेह न्यास को प्राप्त होता रहेगा।

आँखों में स्नेह, जिह्वा पर शहद, ऋषिवर के प्रति अनन्य निष्ठा, वितण्डावादियों की उपेक्षा कर सकारात्मक भाव से कर्त्तव्यरत् रहना आदि विशेषताएँ अगर किसी व्यक्तित्व पर चरितार्थ की जावें तो परिणामस्वरूप एक ही नाम सामने आता है-ममतामूर्ति शारदा दीदी । अपने पति (स्मृति-शेष) श्री सुरेशचन्द गुप्त से आर्य विचारधारा आपने प्राप्त की। स्थानीय मीरा गर्ल्स महाविद्यालय में सेवा में रहते हुए भी आप अनेक समाजसेवी संस्थाओं के माध्यम से समाज सेवा के क्षेत्र में अग्रणी रहीं और उपाचार्य के पद से अवकाश प्राप्त करने के पश्चात् तो अपने स्वयं को सर्वतोभावेन माँ आर्य समाज को समर्पित कर दिया। न्यास-हित सदैव आपकी प्राथमिकताओं में रहता है।

श्रीमती शारदा गुप्ता
उदयपुर

Title Verification - RAJHIN16158/20/1/2012-TC

जैसे सिंह वा मांसाहारी हृष्ट-पुष्ट
पशु को मारकर खा लेते हैं,
वैसे स्वतन्त्र राजा प्रजा
का नाश करता है,

महर्षि दयानन्द सरस्वती

इसलिए एक को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार न देना चाहिए,
किन्तु राजा जो सभापति, तदधीन सभा, सभाधीन राजा,
राजा और सभा प्रजा के आधीन और प्रजा राजसभा के आधीन रहे ।

– सत्यार्थप्रकाश पृ. १३९

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक आर्य